

Reg. No. B. 431

श्रीमद्विजयानन्दसूरि सद्गुहम्भो नमः

श्री

## आत्मानन्द प्रकाश।

॥ स्वग्धरावृत्तम् ॥

सर्वान् पश्यन्तु बन्धुनिष जगति जना भेदवुद्धि विहाय  
स्थाने पाश्रे च कर्तुं वितरणमसक्षास्तु बुद्धिर्धनस्य ॥

दीने नमा भवन्तु प्रखरधनवतामग्रगण्या हि शश्वद् ।

‘आत्मानन्द प्रकाशं’ विदधतु हृदये श्रीज्ञिनः आवकाश ॥

पु० २३ मुं | बीर सं. २४५१. आश्विन. आत्म सं. ३० | अंक ३ जो.

प्रकाशक—श्री जैन आत्मानन्द सभा—भावनगर

विषयानुक्रमणिका.

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ श्री सिद्धचंद्र आराधन.	४३	६ सदाचार अथवा सतिक्या.	७१
२ अलिनंदन. ....	४४	७ प्रकीर्णु. ....	७५
३ विश्वरथना प्रथ.	४५	८ वर्तमान सभाचार-स्विकार	
४ वाही श्री हेवसूरिणी....	६१	अने सभालीयना. ....	७६
५ श्रद्धा. ....	६६		

वार्षिक भूल्य ३. १) ८पाल भर्य ४ अग्ना.

भावनगर—आनंद श्री-टी-ग्रेसमां शास गुडाप्पन लः लुबाइये छायु.

## “ श्री पूजा संग्रहः ॥ ”

•यायांभानिधि श्रीमद् विज्यानंदस्मृति ( आत्मारामण महाराज ) कृत पांच,  
मुनिराज श्री वक्षबिज्यल महाराज कृत सतर, तथा श्रीभान  
मुनिराज श्री हुंसविज्यल महाराज कृत एक पूजा.

मणि कुल त्रेवीश पूजनोनो संग्रह एक साथे सुशोभित गुजराती टाइपमां उच्चा कागजोमा  
छपावी सुंदर कपडाना पाड़ा बाध्डीगथी अंधावी शुभारे पांचसे पानानो आ दण्डार अंथ  
दालमां प्रकट थेल छे. आ पूजासंग्रहमां मुनिराजश्री वक्षबिज्यल महाराजे अटपद्धत तथा  
श्री अक्षयर्थपट्ठी छेल्ही अनावेली पूजा तो अलाक्किड आवआही, फलालीत्यपल्लाथी एटकी  
बधी सुंदर अनेली छे के ते पूजा अचुवानारा अंधुओआ अने वांचकवर्गे एक अवाने वभाष्य  
करेला छे, आ अंथमां आवेली पूजाओ जूदा जूदा रागरागिणीथी अवंकृत थेल हेवावी  
बधुवनार अने सांकणनारने आल्हाद उत्पन्न करे छे. सर्व अंधुओआ-हेवक्तिना उत्सुक्त  
लाल ले ते हेतुथी तेनी किंभत घटाई दा. १-८-० होइ इपेया राखेल छे. जेथी हरेक लैत  
अंधुओआ भंगावी लाल लेवा युक्तु नही.

### श्री नवपद्धत्तुनी पूजा ( अर्थ, नोट, मंडल, यंत्र, विधि वगेरे सहित.)

प्रखुक्तिमां तक्षीन थध धृतिसिद्ध जलही मास करवा माटे, पूर्वार्थ प्रथीत पूजाओ  
एक कारण छे. अवा हेतुथीज श्रीमद् यशोविज्यल महाराज कृत नवपद्धत्तुनी  
पूजा, अमोआ तेना लावार्थ, विशेषार्थ अने नोट साथे तैयार करी प्रकट करेल  
छे. साथे श्री नवपद्धत्तुनुं भंडुल तथा श्री नवपद्धत्तुनो यंत्र के ने आयंभील-ओणी कर-  
नारने पूजन करवा माटे उपयोगी छे, ते अने छणीओ उच्चा आर्टेपर उपर मोटा अर्थ  
करी धधुा सुंदर सुशोभित अने मनहर अनावी आ अंथमां दाखल करवामां आवेल छे. आ  
साथे तेनी संपूर्ण कियाविधि, वैत्यवंदन, स्तवनो, रतुतिओ अने साथे श्रीभान पद्ध-  
विज्यल महाराज अने श्रीभान आत्मारामण महाराज कृत नवपद्धत्तु पूजाओ  
दाखल करेल छे. उच्चा एन्ट्रीक पेपर उपर गुजराती सुंदर जूदा जूदा टाइपेथी छपावी उच्चा  
कपडाना बाध्डीगथी अवंकृत करेल छे. श्री नवपद्धत्तु आरावनना लज्जासु अने घोपी  
माटे आ एक उत्तम कृति छे. किंभत दा. १-४-० पौस्तेज जुदु.

पृष्ठ ५५०

### श्री हानप्रहीप भाषांतर.

किंभत ३. त्रय

धर्मिना यार प्रकार-दान, शीयल, तप अने आवमां हानधर्म ते मुख्य छे.

आ हानधर्मनां लेहो, तेनु विश्वारयुक्त वर्णन, तेना विशेष लेहो अने आ हानधर्म तुं  
आराधन करनार आदर्श लैन महान् पुझेनां वीश अद्भुत चरित्रो, कथाओ अने भीज  
अंतर्गत विशेष चमत्कारिक कथाओ आ अंथना बार प्रकाशमां आपवामां आवेल छे.

आ अंथ साधांत वाचवाथी गमे तेवो मनुष्य पण्ह हानधर्म आहरवा तत्पर थाय छे.

सुशोभित रेशमी कपडाना पाडुं बाध्डीग करावी तैयार करेल छे.

हरेक मनुष्योआ योताना धरमां-लायप्रेरीमां अने निवासस्थानमां तथा मुसाहीमां आ  
उपयोगी अंथ राखवो जोईओ. किं. ३-०-० योस्तेज अलग.

श्री

# आत्मानन्द प्रकाशः

॥ वंदे शीरम् ॥

का अरई ? के आणंदे ? इथं पि ब्रग्गहे चरे, सब्वं हासं परिच्छज्ज आलीणगुत्तो परिव्वए । पुरिसा ! तुपमेव तुमं मित्तं कि बहियामित्तमिच्छसि ? । जं जाणिज्जा उच्चालइयं तं जाणिज्जा दूरालइयं, जं जाणिज्जा दूरालइयं तं जाणिज्जा उच्चालइयं । पुरिसा ! अत्तमेव अभिनिगिज्जा, एवं दुखवा पमुच्चसि । पुरिसा ! सब्वमेव समभिजाणाहि, सब्वस्साणाए उवड्हिए से मेहावी मारं तरइ । सहिओ धम्ममायाय सेयं समगुपस्सइ ॥

आचाराङ्गस्त्रम् ।

पुस्तक २३ मुं. { वीर संबत् २४६१ आश्विन, आत्म संबत् ३०. } अंक ३ जो.

ॐ

## श्री सिद्धचक्र-आराधन.

आराध्य-आकृति.—

( १ )

आश्विन चैत्र ताष्ठी कड्डी अष्टानिष्ठिका ऐ शाश्वति,  
आराध्यवा ईरभान छे सिद्धचक्रनुं जेभां अति;  
अरिहंत-सिद्ध-सूरिश-ने उवअज्ञाय-साधु साथज्यां,  
नाषु-दंसाधु-यराधु-तप भणी सिद्धचक्र धने ज त्यां.

आराधन-सत्रकृति.—

( २ )

आदेखीचे नवदल कुमल निजहुहय पट्टपर घ्रेमथी,  
सिद्धचक्रनी धटना करो संपूर्ण शास्त्रिय नेमथी;  
आराधना त्रिकराधु योगे द्रव्य भावे वधारथो,  
हुःभ यूर्ध्व करी सैलाग्यने श्रीपालवत् आस्वादथो।

( वेदवाद धनलु. )

—\*■■■■■\*—

## અભિનંદન.

પધારો પધારો નાથ ! લગવાનું જાત નંદન !  
તમેને છે તમેને છે ! અમારાં ડેટિ વંદન ! ૧

ઓજસુ આપનાં આજે પૂર્ણી તલને એપતાં;  
કૃતાર્થતા અવધિ પામી હૈયાં શાં અમ શોભતાં.  
નથનો આપને નિરખી તૃસુ ન પામતાં હજ;  
નેહ લેહ ! જરા નેહ ! વાંચના વધતી જતી. ૩

વસંતની નવ લક્ષ્મી વધામણી આપતી અહીં;  
જગતના નાથનું આતિથ્ય કરવા આતુર થઈ ઉલ્લી. ૪

વધાવા આપના પાહો સમારલો થઈ રહ્યાં;  
મંગળ વાળું નના નાહો હિગંતમાં વ્યાપી ગયા ! ૫

આજનો ઉત્સવ પામી ધન્ય જાત ગણે ધરા;  
અદંકાર સુલુ રહી છે ! નાથ ચરણ્ણો પામવા.  
મધ્યદોક પુર દ્વારે થાય છે પ્રવેશ આપનો;  
તૈલોકય માંહેના જંતુ જપે છે બાપ આપનો. ૭

રંગાં છે પુરનાં બુધનો રતન શ્યા ! ન્યેત રંગથી;  
ચંદ્રિકા ધન્ય ! થાંબે છે, કરી ભક્તિ નિજ અંગથી. ૮

સ્વસ્તિકો પુરાચે છે મૈાંકિકોના ગૃહે ગૃહે;  
પંચરંગી પુષ્પ રતનોથી પુલાચોછે સ્થળે ! સ્થળે ! ૯

પૂજન અર્યાન કડં સાથી રંડતા ! હસ્તને વરી !  
કૃત્ય પુન્ય ! થઉં છું હું ‘આ કાવ્યમાળ કંઠે ઠની !’ ૧૦

“ પધાર્યાં નાથ પધાર્યાં નાથ ! અહો ! હૃદયા નંદન !  
સ્વીકારોને ! સ્વીકારોને ! અમારા આ અભિનંદન ! ” ૧૧

શાહ ગોરંધનસાઈ વીરચના  
સીનોરવાળા.



विश्वरथना प्रथं॒ध.

५५

## विश्वरथना प्रथं॒ध.

( निवेदन १० भुः )

( गतां॑ पृष्ठ ३६ थी शः )

गया अंकमां आवेद लुडीकरने। अहि॑ काष्यकार विशेष खुलासे। करे छे के॑  
विश्वरथना भीज नामे। अग्नि, हिरण्यगर्भ, विराट, प्रजापति अने अह्मा  
ईत्याहि॑ छे। \* ( अं॑ ३ अध्याय ३ )

२२ अथर्व वेदिय अैनोपनिषद्भां इत्यायन, भागवतवद्विं, केशत्य  
आश्वलायन अने भारद्वाज ऋषीना प्रक्ष १-२-३-६ ना उत्तरमां पिप्पलाद  
जल्लावे छे के॑—

प्रजाकामो वैप्रजापति सतपोतप्यत । सतपस्तप्त्वा समिथुनमुत्पादयते नविच्चप्राणं॒च ॥  
इत्येतौमे बहुधा प्रजा करिष्यत इति॒ ॥

प्रजापतिए॑ तप तपी॑ रवि॑ अने प्राण्युत्तु जेडु॑ उत्पन्न करी॑ विचार्यु॑ के॑ आ  
भु॑ प्रजने॑ कर्शे॑। ( प्रक्ष १ सूत्र ४ )

आराहवरथनाभौ॑, । प्राणे सर्वे॑ प्रतिष्ठितम् ॥

कह्चो यजूंषी॑ सामानि॑, यज्ञः॑ क्षत्रं॑ ब्रह्मं॑ च ॥

अट्टेले—२८नाभिभां॑ रहेव आरानी॑ ऐडे॑ प्राण्युमां॑ ऋचा॑, वेद, यज्ञ, क्षत्र अने  
अह्मा॑ विगेर॑ रहेव छे॑ ( ५ ) पांच महाभूत कर्मनिद्रय अने खुद्धीनिद्रय॒पी॑ हेवोमां॑  
पशु॑ प्राणु॑ श्रेष्ठ हेव छे॑। ( ६ ) प्रजापति गर्भमां॑ उत्पन्न थनार, हेवोने॑ वनिह,  
पितृनोस्तप्त्वा॑, धृ॑, इ॑, गगनगाभी॑ ज्येष्ठतिष्ठति॑, विश्वपिता॑ अने वायुनो॑  
पिता॑ पशु॑ प्राणु॑ छे॑।

प्राणस्येदंवेशसर्वे॑, त्रिदिवेयत्प्रतिष्ठितं॑ ।

मातेव॑ पुत्रान्॑ रक्षस्व, श्रीश्च॑ प्रज्ञांच॑ विदेहि॑ न ॥

जे॑ त्रणे॑ लो॑कमां॑ छे॑ ते॑ अधु॑ प्राण्युने॑ वश छे॑ × × मातानी॑ ऐडे॑ पुत्रतु॑॑ रक्षणु॑  
कर अने॑ श्री॑ तथा॑ खुद्धि॑ आप॑। ( प्रक्ष २ सूत्र १७ ) आ॑ प्राणु॑ आत्मा॑ ( अक्षरथी॑  
उत्पन्न थाय छे॑ ) कर्म॑ साथे॑ शरीरमां॑ आवे॑ छे॑ अने॑ ते॑ भाकीना॑ हरेके॑ प्राण्युने॑  
यथास्थाने॑ जोडवे॑ छे॑ अने॑ प्राणु॑ × × × नाडीये॑ × × × ईत्याहि॑ ईत्याहि॑।  
( प्रक्ष ३ ) अर्थात्॑ ते॑ पुरुषे॑ हिरण्यगर्भने॑ नामे॑ प्राण्युने॑ जनावये॑ अने॑ प्राण्युथी॑  
श्रद्धा॑, आकाशा॑, वायु॑, ज्येष्ठा॑ति॑, पाण्यु॑, पृथ्वी॑, धनिद्रय॑, मन॑, अन्न॑, वीर्य॑, तप॑,  
मंत्र॑, कर्म॑, लो॑के॑ अने॑ नामे॑ जनावया॑। ( प्रक्ष-६-सूत्र-४ × आनंदाश्रम० )

२३-तैतिरथ प्राण्यु॑ अष्टक ८, अैत्याय ३ अनुवाक १० मां॑ कह्यु॑ छे॑ के॑—

५६

## श्री आत्मानंद प्रकाश.

**प्रजापति:** सोमं राजानमसृजत्. प्रज्ञपतिए प्रथम सोमराजने उत्पन्न कर्त्ता पधी न थे वेद अनाया, के त्रिषुने सोम राज लेतो हुवे।

२४-ऋग्वेदसंहिता मंडल १० सूत्र ७२, (साधन आध्यात्मिक) मां कल्युं छे के—अद्वा देवताओंने कर्मनुसार जन्म हेता हवा. देवताओंना पूर्वयोगमां असत् सत् अन्या दिशाओंने उत्तानपाद थया, उत्तानपादथी पृथ्वी अने पृथ्वीथी दिशाओं थर्त. अहीतिथी दक्ष अने दक्षथी अहीति अनेल छे. हे दक्ष ? त्वारी पुत्री अहीतिने जन्म थये।

२५-ऋग्वेदसंहिता मंडल १० सू. १६१ मां लभे छे के—क्रितं च सत्यं च इत्यादि. तपथी सत्य थयुं पधी अनुकमे रात्रि अहोशत्रि अने संवत्सर उत्पन्न थया. धाताओं थथापूर्व सूर्य अंद्रनी कृपना करी तेमज आकाश पृथ्वी अने अंतरिक्षादि अनाया।

२६-तैतिरिय आध्यात्मिक अध्याय ८ मां को अद्वा वेद कहह प्रबोचत् धृत्यादिथी जाणुवे छे के—सृष्टि डेना माटे डेणु उपज्ञवा छे ते डेणु जाणु छे ? डेन एम धारे के देवताओं जाणुता हुये, पछु देवताओं तो पृथ्वी रचना पधी उत्पन्न थया छे. ते वृक्ष क्या वनतुं छे ? अने डेणु छे के जेथी द्यावा पृथ्वीइपी इण उत्पन्न थयुं धृत्यादि पृथ्वी जाणु छे. आ सर्वना अध्यक्ष परमाकाशमां छे ते पृथ्वी जाणुता हुये के नहीं जाणुता होय.

२७-वाज्सनेयसंहिता अध्याय १७ मंत्र ३२ मां पथु आज मंत्र छे।

२८-ऋग्वेदसंहिता अ० १० सू. १२६ मां पथु उपर प्रभाषु ज मंत्र पाठ छे।

२९-ऋग्वेदसंहिता. १-उप-६ मां तिसोद्यावः धृत्यादिथी जाणुवे छे के न थे लोक छे के पैकीना ऐ लोक सविताना उद्दरमां अने एक लोक यमना लुवनमां छे. अंद्र तारा विगेह देवो तेनी उपर ऐडा छे. तथा—

इहवीतु य उ तत्त्विके तत्

आ सर्व जेणु प्रत्यक्ष जाणुल छे एवो डेअ होय तो ते अहा आवीने जाणुवे। × ३६ वेद शाखपर टीपणी।

१ वेहना कर्ता डेणु ? २ वेदमां शुं शुं कथन छे ? ३ वेद क्यारे अन्या ? अने ४ वेहनी कह आपा छे ? ते माटे पौर्वात्म अने पश्चिमात्म ग्राचीन अने अर्वाचीन विद्वानेनी मान्यता नीचे मुजब छे।

१ वेहना कर्ता भर्त्याओं माटे वेद अने पुराणुना पाडो आ प्रभाषु छे. क ऋग्वेद अष्टक अध्याय. ४. व० १७-१८-१९. मंडल. १० अनुवाद. ७ सूत्र ६० कथे छे के-वेद छन्द अने गायत्री यज्ञथी थया छे. ख-अैतरिय आत्मथु कहे छे के न थे वेद अग्नि सूर्य अने वायुथी उत्पन्न थया।

## । वैद्यरत्नना प्रथमं॑॥

५७

छ. ग—अथर्व वेद संहिता कांड. १० प्रपा. २३, अनुवाक. ४ मंडल २० मां कहे छे के—  
ऋग्वेद अने यज्ञुर्वेद परमात्माथी उत्पन्न थया छे अने सामवेद तथा अथर्ववेद पर-  
मात्माना रोम अने मुख हता. ५० गे. ५६ आलण्यमां कहे छे छे के—वेद ओंका-  
रथी थयेल छे घ—शतपथ कांड १४ अ. वा. ४ क. १० मां कथन छे के चारवेद परमात्माना उक्षा-  
सर्पे छे ( तत्वनिर्णय प्रासादे ) च—पुराणुकारे कहे छे के—चार वेहो. यत्पुर्खी अलाथी  
थयेल छे छ. भनुरभृतिमां कहुं छे के—अग्नि वायु रविभ्यस्तु, ऋयन्नस्तु सनातनः ॥

दुदो ह यज्ञ सिद्धर्थ—मृग्यज्ञः साम लक्षणं ॥ एटले अला यज्ञनी सिद्धभाटे  
ऋग् यज्ञ अने सामवेदने अग्नि वायु अने दविथी होहतो हवो. ज ऋग्वेदनी केटलीक ऋग्याए  
अगस्त्य ऋषिनी पत्नी लोपमुदाए लभी छे झापरिवल्के अथर्व ऋषि पासे वेदनो अन्यास  
कर्ते. ( च० च० )

ज आर्यतत्व प्रकाश व्याख्यान १ लुं पृष्ठ २० मां लाजे छे के—ऋग्वेदनो आहि मंत्र  
रामयंद्गुना समझालीन. विश्वाभिनना पुत्र मधुचंदसे अनावेल छे अने अंतिम मंत्र अधमर्ष-  
णुऋषिए अनावेल छे. ( मा० ध० स. ६७८ )

ठ वणी एक उत्तरोत्तर लभायेल याही जण्यावे छे के—त्रिषु वेद अनावनार लांड इग अने  
राक्षस हता, अने जईरी तुर्दरी विगेरे प्रतिष्ठित कुणामांथी पडितो थया हता. तेओआए दक्षिणा  
भाटे अनेक प्रकारे रचेला छे. ( सर्व दर्शन० सनातन. )

ठ—ज्ञैन महर्षिए कहे छे के—संसार दर्शन, संस्थान दर्शन तत्वावध्य अने विद्या  
प्रभोध, ये आचीन चार वेहो छे जेमां देवकार थतां वसुराजना गुरुभुन पर्वतक तथा पिपलाद-  
थी नवा वेहोनी रथना थयेली छे. जुना—आचीन वेहोनो कांचकलुमावरेष दक्षिणमां होवानुं भानी  
शकाय छे.

ठ—आगार्य भलयगीरिणु कहे छे के. कंड ताणवुं होइ उष्मा नांड जुल मुख विगेरे न  
होय तो शम्भनो उच्चार थध शेंक नही. भाटे कंड विगेरेने धारणु करनार कोच व्यक्तिओआए  
वेद अनावेल छे जेमां मुख्य वनवासीओ हता.

ठ—कै० प्र० अनसीवाणा विगेरे वेदने अपौरुषेय अंथ तरीके माननारा हता. ( समालोचक )

ग—वैशं पायनमृषिए यज्ञुर्वेदनी ८६ शाखा करी छे येम वेदनी हजरो. शाखा थयेली  
छे जे दरेकमां परस्पर अकी लाव हेखातो नथी.

२ वेदमां शुं शुं शुं कथन छे ? आ भाटे भेक्षमुखर विगेरे विदानो कहे छे के—वेदमां अनेक  
प्रसंगीतुं वर्णन छे, परस्पर विरोधतावाणा पाडो छे. आम पुढ़ना मुखमांथी न निकल्या  
होय अवा उथनो छे, सहाय भाटे धूद आहि देवेना आभंत्रणो छे, यशेना पाडो छे, योमवल्लीनी  
मागण्यीओ छे, गायतुं रक्षणु करवा भाटे सहाय मागवाना उल्लेखो छे, धर्मना भार्गो पणु छे,  
जहु कण पहेलानां अने अहय कणे थयेला ऋषिओना अधिकारे छे, पुराहितनी महताना अने  
दक्षिणा भाटेना उल्लेखो छे, ( प्रवासी ) अने जैन तीर्थं करो शंकर, अला, वड्यु, वायु, अग्नि,  
सर्व विगेरैनी स्तुतिओ छे जुओ—

A. ऋग्वेदमां कहुं छे के—ज्ञैलोक्य प्रतिष्ठितान् चतुर्भिंशति तिर्थकरान् ऋ-  
षभाचा वर्धमानान्तान् सिद्धान् शरणप्रपद्ये, ३५ पवित्रं नग्नमुप विप्रसा-

- महो पशानग्ना ज्ञातियेषांवीरा: आ भंत्र मां तथे लोकमां प्रतिष्ठित ऋषि-  
भृथी वर्धमान् भुधीना चोपीरो तीर्थं कुर सिद्धोनी स्तुति छे.
- B ऋग्वेद अष्टक. १ अध्याय. वर्ग. १६ ४३ स्व० इन्द्रो वृद्धश्चवा: स्व० पुषाविश्व-  
वेदा: स्व० ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्व० वृहस्पतिर्द्वातु. आ पाठमां  
अरिष्टनेमीनुं नाम सूचयेत छे.
- C यजुर्वेद अध्याय २५ भंत्र. १६ ३५ नमो अर्हनो ऋषभो ॐ ऋषभ पवित्र  
पुरुष्टुतमध्यवरं यज्ञेषुनग्नं परमे माह संस्तुतं वरंशशुभयेतं पश्चुरित्र  
माहुरिति स्वाहा: दीर्घायुस्तायु बलायुर्वा शुभजातायु. आ पाठमां ऋषि-  
भृथे अरिष्टनी स्तुति विभेदे छे.
- D ॐ रक्ष रक्ष अरिष्ट नेमिः स्वाहा: वासदेवशास्त्र्यर्थं मनुविधिय ते सो-  
स्माकं अरिष्टनेमिः स्वाहा: आ भंत्रमां वामहेवनी शांति भाटे-डाभृथी अयदा  
भाटे अरिष्टनेमिप्रभुनी सहाय भागेल छे.
- E नमं सुविरं दिग्बाससं ब्रह्मगमं सनातनं आ पाठमां ध. स. पूर्वे ८२४ वर्ष  
थयेल सर्वं रा अगवान् सनातनं अयेलक भहावीर प्रभुने नभरकार छे.
- F यजुर्वेद विश्वेष ऋच्या-नेहतं वर्धमानं स्वस्तिनः । इन्द्रो वृद्धश्चवा स्वस्तिनः ।  
पुरुषा विश्ववेदा स्वस्तिनः । ताक्ष्यो रिष्टनेमिः स्वस्तिनः ॥ आ भंत्र  
पथु वर्धमान प्रभु अने अरिष्ट नेमिना आधकारवाणे। छे. ( जुन्मो B )
- G अर्थवेदनी रामताप तथा गोपाणा तापनी उपनिषदमां विष्णुना अवतारेतुं वर्षुन-  
छे जे पैकीना सत्ययुगमां १२ त्रेतायुगमां रामयं दृष्ट अने दापरयुगमां दृष्ट्युपतार  
थयेल छे.
- H ऋग्वेदसंहिता । क्ले छे क्ले-हे वसिष्ठ ? हिंद्र तारी प्रार्थनाथी दश राजना युद्धमां सुरदासनी  
रक्षा डरी ( च० च० )
- I ऋग्वेद अष्टक ८ मां एक डाई नपुंसक राज्ये भहात्मानी कृपाथी पुरुषपण्यामां आवी  
दान कर्तुं तेनी तारीह छे.
- J ऋग्वेदमां एक अनन्ती चोरी करतां लसता कुतराने अंध राखवानो वसिष्ठनो भंत्र छे.
- K इन्द्रस्यनुर्वा याणि ग्रोषाचंयाति चकार प्रथमानी वज्रो आवेद पाठमां धंदना  
मोटा क्योनी तारीह भाटे आरंभस्युक पद छे. ( सतभत० )
- L ऋग्वेद संहिता अष्टक ३ अध्याय २, वर्ग १२-१३-१४ ऋच्या १ थी १२ मां विश्वामित्रने  
पुरोहितनो अधिकार छे जे घटना पंज्यमां शतकु अने पिपासा नहीना काठे थयेल छे.
- M ऋग्वेद संहिता. अध्याय ८ अ० २ व० २३ ऋच्या ३ मां वसिष्ठे सुहाने आपेक श्रापने  
संबंध छे लाप्यकार क्ले छे के वसिष्ठ संप्रदायी आ ऋच्याने सांखणा नथी.
- N ऋग्वेद संहिता. अ० ४ अ० ४ वर्ग-२० मां खी साथे विषय न सेववा देवा पेटीमां पुरी  
राखेल समवद्धी ऋषिनी ज्ञानानो। अने देवस्तुतिनो अधिकार छे. विजिहीश्व  
वनस्पते ? योनिः-सूषग्न्याहक, हे वनस्पतिथी अनेक पेटी ? खीनी चोनिनी गेठे  
चोम्हंडी थर्जन्ह. अंते आ भागणी पुरी थाय छे अने अहार नीकणी खी भोगवाय छे.

## विश्वरचना प्रथां॒॒॒.

५६

- O अङ्गवेद संहिता अ० ६ अ० ६ वर्ग. १४ मां. अतिनक्षिणी दुर्भगा पुत्रि अपालाए  
पिताना भाये वाण उगवानी पिताना द्योत्रमां, सुंदर इय उपज्ञवानी अने पेताना  
युद्धस्थाने वाण उगवानी याचना करी छे, जे कामनानी ईद्व वडे पूर्णिषुति थाय  
छे. ( तत्त्वनिर्णय० )
- P ३१० राजेन्द्रना सामवेदमां लघे छे के एक सन्यासीए वेदनी निंदा करी हती जेतुं धन  
भृगुने आपी हेवामां आ०युं हतुं.
- Q ,, औतरिय खालखुमां नोंध छे के डेटलाक यतिएने शृगाणनी सामे इंको हेवाना। दृढ  
करवामां आ०यो हुतो.
- R ऋग्वेद अ० ३ अ० ३ वर्ग २१ ऋच्या १४ मां यज्ञानने युरे भाननार झोकट अने  
भगववासी भनुण्यो भाटे लघे छे के—  
हे छिन्द॑ ? अनार्य देशमां अने दानयसमां शुं शायदो छे एम कडेनारा तथा स्वेच्छा-  
ए आहार विहार करनारा नास्तिका पासे ने गायो छे, ते तमोने शुं शायदाकर छे ?  
कारखु के लोडा तेतुं दुध सोभरस ( भाद्र वेलडी )मां भजववा भाटे हेता नथी. भाटे  
वैदिकर्मीमां नहीं आवनारी गायो अमने आपो अने जे पैसा उधारी बमधु ठरे छे  
ने ते पैसा तमारा काममां वापरता नथी ते पैसा पशु अमोने आपो. नीय शाखामां  
जन्मेल अवा ते पुरुषातुं धन अमोने आपो, कारखु के अमारं धन यज्ञादि द्वारा  
तमारा काममां आवे छे. ( ३ )
- S पश्चपुराशु अ० ७ अध्याय ६ मां कडे छे के

**बेदा विनिवितायेन, विलोक्य पशुहिंसनं ।**

**सङ्क्षेपेन तत्त्वयायेन, तस्मै बुद्धायते नमः !!**

आ श्लोकमां वेदनी हिंसा अने भुक्षेवनी इपालुतानी साधीती छे.

3. वेद कुयारे भन्या ? आ प्रअनो उत्तर वेदना पाणीधीज करी शकाय. वेदमां वसिष्ठ ऋषि  
विश्वभिन, भृगुऋषि सुदास स्पैतवधीऋषि, अपाला, अरिष्ठनेभि तथा महावीर हेवनो  
अधिकार छे एटेके आ उपरथी सिद्ध थाय छे के उपरोक्ता व्यक्तिए। पधी वेदनी रचना  
थध छे तथा लैन विगेरे डेटलाक धर्मेनी हरिदार्घमां वेदनी अति आवश्यकता जेवाइ छे.  
हवे महावीर प्रभु पछी तुरत वेदनी इचाओ बनवातुं बंध थयुं छे एम भानी लध्ये तो  
२४०० वर्षे वेद रचना काळ होइ छे.

अर्वाचीन लोडा वेदकाणना १२००० के १४००० वर्षे इरावे छे ते पहेलां चेलियन्स नामे  
लोडा हुता.

लो० ८० तिलक वेदकाणना १२००० के १४००० वर्षे कडे छे. आर्यतत्व प्रकाशमां कथन छे  
के इवेदनो आदिभंन अंत्यभंन करनार कृषिए। उपरथी समय शोधीए तो इवेदरचना ३४०  
( ११२०+१६८० ) ३००० वर्षे थाय छे. वेदमां हीर्व आयुष्य वर्षे ३०० तुं कडेल छे जे  
उपरथी पशु वेदकाण शोधी शकाय छे

४. वेदनी कृष्ण लाखा छे ? आ बाखतमां विचारीए तो एम भानवुं पडे छे के वेदनी भाषा  
भङ्ग विचित्र छे, डेमके तेना भाष्यकारो अने गीकाकारो पशु स्पष्ट अने संगत अथे करी

शक्ता नथी. हरेक विवरणुकारो एकज सत्रना जूहा जूहा अर्थ करे छे. जुओ ४० वा० सं० ४० १३ मं० ४ तथा ४० वा० सं० ३०-१३ मं० ३० विग्रेरे एटले समज शक्तय छे के वेहनी भाषा असंस्कृत-व्याकरणुना संस्कारथी रहित [ आडत पणु नहीं ] तेमज संस्कृत-संस्कारवाणी [ शब्दानुशासन, लींग, विभक्ति, समास अने प्रत्ययना नियमेथी युथेली ] नथी पणु अने भाषा भेणारप-भिन्न भाषा छे अने वेद भाषा शिखवा भाटे अलापहुँ वैहिक व्याकरणु छे.

आ संबंधमां विशेष जाणुवा धर्मान्वारे सरस्वती १११ सने १६०८ सालेवरमां आ-आवेद वेदविहित विनायक विश्वनाथनो वेद देख वाची ज्ञेवा.

समृति अने पुराणेभामां पणु प्रस्तुत चार प्रश्नोन्नो विचार करी लाईयो. जे समृति क्षेत्रे डेव तेना नाभीनी ते समृति ओणाभाय छे. जेमड यात्रवल्क्य समृति-मनु समृति विग्रेरे पुराणुना करनारा अनेक परितो थाया छे ज्ञेनो नाभीवार भुलासो भणी शक्ता नथी पणु अव-क्षारथी तो “ आसल्लानां पुराणे ” ए प्रभाषे जोलाय छे.

समृतिभामां व्यवहार भार्ग दर्शाये छे अने पुराणेभामां चरित्र तथा धतिहासना पाडो छे. हरेक देवनां जुहां जुहां पुराणे छे अने ले देवनु ले पुराणु छेय तेभां ते देवनी उत्तमता अने अद्य इतिरिक दृष्टिये कडीने तो भीज्ञ देवनी जौखुता वर्ष्णवेत्त छे, न धर्मी शक्तय एनो परस्पर भेदभान, क्षणिक प्रशंसा तथा निहाना पाडो पणु छे. ऐतिहासिक विरोधे पणु दृष्टिगोचर थाय छे. जेमड लग्वानना मनुना पुन कपिले कपिलशास्त्रभामां अने अह्मानाजमाध गौतमे न्यायशास्त्रभामां गीताङ्ग, कणियुग अने छ दर्शननो अधिकार आयेयो छे. एटले कपिलशास्त्र अने गौतमशास्त्र गीताङ्ग कणियुग अने छ दर्शननी पहेलानां के शुं ? त्रेतानां अंतमां वालिमझेष थाया अने त्यारपछी १२४००० वर्षै दापरना अंतमां व्यासलु थाया छतां आर्थ छे के, व्यासलुना माहालारतमां वालिमझेलुनी सहाय हुती. व्यासलुना पद्मपुराणुमां ध. स. १२०० सुधीनुं वर्ष्णन छे. राजतरंगीणी कडे छे के कलियुगना ८५० वर्षै पछी पांडवा थाया छे ज्यारे भीज्ञ अयोध्यामां भीज्ञुं कथन छे. एक कल्पना ४००० युगना मन्वंतरो १११ थाय छे. हवे पहेला मन्वंतरमां प्रियतना वंशना राज्यायो हुता. भीज्ञ मन्वंतरमां प्रियतना लाई उत्तानपाहतो वंश हुतो. उत्तानपाहूं शीय द्वेष सामममन्वंतरीय इत्यपने पोतानी पुत्री परण्यानी हुती.

टेलाक एवा उपनिषद अने पुराणुना अधिकारो छे के ज्ञेनो मान युक्तिथी सत्य मानवा पडे छे के —जेमड ब्रजपति—रवि एगी-उषाने, लोगवे छे. धू८—रवि अहत्या रात्रिने रपर्शे छे. असम—असम अने जटा-धुमाडो इ८—अग्निनुं चिन्ह छे.

धन्वा-जग अने धू८—आडाश, ( इतिहास तिमिर नाशक ) वेदना भिन अने वरण्युने पाश्चात्य विद्वानोना हाठडेजन अने ओडिमजन छे. ( सत्य ) पर्वन्यथी अन अने अन्नथी भूत छे. ( गीता ) अग्निनी आहूति आडाशमां जतां वृष्टिर्षे नीये आवे छे. एटले सूर्यथी वृष्टि, वृष्टिथी अन अने अन्नथी प्रज्ञ छे. ( मनुस्मृति )—वेदमां स्वर्गथी सुभ विशेष-परी अने उर्वशीथी अरण्युपक्षनी पीछान छे. ( नन्दीसूत्रवृत्ति )

दो० भा० तिलक पणु कडे छे के उपनिषदना टेलाक पाडोभामां वात एक अने उद्देश भीज्ञ छेय एवा छे. ( मृग० ) भागवतमां पणु अध्यात्मभार्गथी जोडवायेल अधिकारो. संलवे छे. उत्पत्तितत्वने अनुसरतुं निर्दशन नीये मुज्ज्ञ प्रत्यक्ष छे. जेमड—धर्म अने अक्षाथी ताम

વાહી શ્રી દેવસૂરિલુ.

૧૧

## વાહી શ્રી દેવસૂરિલુ.

( ગતાંક પૃષ્ઠ ૪૪ થી શરૂ )

વાહિશ્રી દેવસૂરિ પછી થયેલા પ્રખર આચાર્યોએ તેઓશ્રીને પોતાના અંથના આહિ ભાગમાં અર્થ આપી તેમના પ્રત્યે પોતાનો અતુલ લક્ષ્ણભાવ પ્રદર્શિત કર્યો છે કે જેઓનાં નામ ભાવથી ઉલ્લેખ આપું છું. શ્રી મહેશ્વરાચાર્ય આવશ્યક સપ્તતતિકા ટીકામાં, જૈન ધર્મ પ્રતિષેધમાં શ્રી સોમપ્રભ સૂરિએ, ધર્મજ્ઞયુદ્ધ મહાકાળયના કરી શ્રી ઉદ્ઘાટન સૂરિએ, શ્રી પ્રધાભનાચાર્ય, મુનિ દેવસૂરિ, સોમચંદ્ર પંડિત, શ્રી મેરુતુંગાચાર્ય આહિ પંડિતો અને આચાર્યોએ તેમનાં શુશ્રૂકીર્તન ગાઇ પોતાની લંઘુતા બતાવી છે. હું આ બધા આચાર્યો પૈકી એકાદ એ આચાર્યોએ તેમનાં જે શુશ્રૂકીર્તન ગાયાં છે, તેના થોડા નમુના આપું તો અસ્થાને નહિ ગણ્યાય.

“ વાદવિદ્યાવતોऽવાપિ લેખશાલામનુજ્જતા ।

દેવસૂરિ પ્રમો: સામ્યં કથંસ્યાદ દેવસૂરિણા ॥

વાર્હસ્પત્યાધિપત્વસ્ય પાતનેપ્રથિતોદ્યમઃ ।

અપૂર્વ: કોઽપિલોકેઽस્મિન્ દેવસૂરિ: કૃતોદ્ય: ॥

ઉત્પન થાય છે. તેમજ ધર્મ, લક્ષ્મી, વૃત્તિ, તુષ્ટિ, પુષ્ટિ, મેવાખુદ્ધિ, શાંતિસિહિ અને કૃતિથી દર્શનિયમ. સંતોષ, લોલઅનુત, -ન્યાય, કોથ, ક્ષેમ, સુખ અને યશ ઉત્પન થાય છે. ડામનંદીથી હર્ષ જન્મે છે. અધર્મ તથા હિંસાના અનુટ અને નિકૃતિપુત્રો છે. તથા લય અને નરકપૌત્રો છે. માયા અને વેદના પૈત્રોએ છે. લય અને માયાનો પુત્ર ભૂત્યુ છે. નરક અને વેદનાનો પુત્ર દુઃખ છે. વ્યાધિ, જરા, શોક અને તૃષ્ણાને ભૂત્યુનો પરિવાર છે. ( વિષણુ ૦ અંશ ૧ ) આત્મા મનોમય જગતનો પ્રેરક છે. જેની રાજસવૃત્તિ, સાત્ત્વિક વૃત્તિ અને તામસીવૃત્તિ તે અત્મા, વિષણુ તથા મહેશ છે. ( ગો ૦ ) આત્મા ત્રિયુણ માયાનડે ત્રિવિધ અહંકાર પામી સ-સારમય-જરા-મજરા ભૂત્યુની વૃદ્ધિ કરનારો થાય છે. આત્માના હૃત્યકમળમાં થયેલ મોહની, કર્મનું ઇળ, સંસારની ઉત્પત્તિ, સ્થિતિ અને વિનાશના અધિકાનિષ્પત્ત દેવત્રિપુરીની પેડે મિથ્યાત્વમોહની, મિશ્રમોહની, અને સમ્ય-ક્રામેહનીઝી ઇળ પ્રકટાને છે.

૩. ક્રપિલશાખ અને ન્યાયશાખાની રચના વખતે છેયે દર્શનો હૈયાત હતાં એટલે છેયે દર્શનો વિશ્વયાપી હતા ત્યારે ક્રપિલલ અને ગૌતમરૂપિ થયા છે. વાયુપુરાણ, મત્સપુરાણ વિજોરેમાં એ હુનર વર્ષ પૂર્વનો ધતિહસ છે. જેથો તેનો રચના કાળ એ હુનર વર્ષ પહેલાં મનાય છે. પદ્મપુરાણમાં રામાતુજર્વાભીનું વર્ણન હોવાનો ઉલ્લેખ છે ( સત ૦ ) એટલે આ રીતિએ ધ. સ. ની તેરમી સદીમાં પદ્મપુરાણનો રચના કાળ મનાય છે. લોજરાજના સમયમાં એ પદ્મિતાએ વ્યાસજીના નામે એ પુરાણની રચના કરો હતી. જેને લોજરાજને દડ કર્યો હતો. ત્યારથી પુરાણ રચનાનું અંધ થયું હશે. સમૃતિ અને પુરાણની લાપા સંસ્કૃત છે. ( ચાલુ )

શ્રીજૈનશાસનસોજવિકાસમાનુ:  
 શ્રીદેવસૂરિરિતિતસ્ય બમૂવ શિષ્ય:  
 દુર્વાદિકૌશિકચયં પ્રતિભાદગનંદ  
 યાવનુ મરીચિનિચ્યૈરપયંચાર

( શ્રી શાન્તિનાથ ચારિત્વ મુનિદેવસૂરિ. )

**ભાવાર્થ**—“ વાહનિધાવાળા શ્રી દેવસૂરિની નિશાળમાં ભણુતા દેવસૂરિ-ભૂહ-  
 સ્પતિ શ્રી દેવસૂરિની સમાનતા કેમ ધારણુ કરી શકે ? કારણુ કે તે તો હજુ શ્રી  
 દેવસૂરિનો નિશાળિયો છે. જગતમાં બધાથી શ્રેષ્ઠ સ્થાન ભૂહસ્પતિનું કહેવાય છે.  
 તેનું જગત અધિપાણું પાડવા માટે કર્યો છે પ્રથત્ન જેમણે એવો દેવસૂરિઝી સૂર્ય  
 જગતમાં કોઈ અનેરો છુયો છે.

“ મુનિચંદ્ર સૂર્યિના શિષ્ય શ્રી દેવસૂરિ શ્રી જૈન શાસનરૂપી કમળના પ્રતિ-  
 ખાધ-વિકાસ માટે સૂર્ય સમાન થયા કે જેમણે પોતાના રસિમ સમૂહવડે વાહીરૂપી  
 ધુવડેના સમૂહની પ્રતિશારૂપી દિષ્ટને આંધળી બનાવી હતી-ઘનાવતા.

અતિષ્ઠિપત્રિવૃત્તિમઙ્ગનાજને વિજિત્ય યે દિક્ષુપટમાગમોક્ષિનિ: ।

વિવાદવિદ્યાવિદુરં વદાવદા જયન્તિ તેડમી પ્રમુ દેવસૂરય: ॥

સિતામ્બરાણામપિ યૈશ્ર દર્શનં સ્થિરં કૃતં ગુર્જર ભૂમિમણઢલે ।

ચલાચલાંદિકિપટ વાદવાત્યયા મનોમુદે તે મમ દેવસૂરય:

તત્પદ્વાચલ પૂર્વપર્વતશિર: શૃંગારતિમદ્યુતિ:

સ્ફૂર્જતકૌમુદચન્દ્રધામનિહતિ: પ્રખ્યાત કીર્તિબ્રજઃ

તાપવ્યાપદપાળતિ પ્રમુદિતૈરસેવ્યમાનો ભૃંતઃ

સચ્ચક્રૈઃ સતતં ચિરં સ જયતિ શ્રીદેવસૂરિ પ્રમુ:

( શાન્તિનાથ મહાકાવ્ય ).

**ભાવાર્થ**—જેઓ આગમની યુક્તિઓવડે દિગ્ભરદેને લુતી સ્વીએને મેલ-  
 કનો હજુ સિદ્ધ કરતા હતા તે વિવાદવિદ્યામાં પ્રખર પંડિત શ્રીદેવસૂરિ જ્ય પામે  
 છે. પામો ’૪. દિગ્ભરરૂપી પ્રખર વાયુ વડે કરી હુચ્ચમચ્ચી ગયેલું ‘સ્વેતાભર  
 દર્શન જેમણે શુભરાતમાં સ્થિર-મજખુત કર્યું હતું તે દેવસૂરિ મારા મનને  
 આનંદ આપનાર થાયો—આનંદ આપો.

મુનિ ચંદ્રસૂરિની પહુ પરંપરારૂપી પૂર્વાચલ-ઉદ્યાચલના શૃંગારરૂપ સૂર્ય  
 સમાન અને શોલતા કેસુદ્ધચંદ્રની કાન્તિના નાશ કરવાથી પ્રણ્યાત થઈ છે કીર્તિ  
 જેમનો ( પૃથ્વીને આનંદ આપનાર ચંદ્રની કાન્તિ સૂર્યના પ્રતાપથી નાશ પામે છે.  
 તેમ દિગ્ભરાચાર્ય કુસુદ્ધચંદ્રને વાહમાં લુત્યો એટલે તેનો પ્રલાવ પણ નાશ

## વાર્તી શ્રી દેવસૂરિલુ.

૬૩

પાખ્યો.) ને તાપની આપહાને હૂર થવાથી—કરવાથી ખુશી થયેતા સત્પુર્ણોવડે સે-  
વાતા શ્રીહેવસૂરિ ચિરકાલ પર્યાંત જ્ય પામે છે—જ્ય પામે.

હવે છેલ્લે તેમની કૃતિઓ. તરફ વળ્યાએ. તેમની એક એક કૃતિઓમાં એક  
એવી અહલૂત સમર્થ કૃતિ છે કે જેને લીધે તેઓ નિરંતર  
તેમની કૃતિયો. વધુને વધુ યશોગામી થતા જ્ય છે. તેમની એ કૃતિ એવી તો  
સબલને સંક્રાંત છે કે જેને દર્શનને પ્રતિપાદન કરનાર સંક્રાંત મહા  
અંથ છે. તેમની અહલૂત શક્તિને, પ્રમલ પ્રતિલાનો, કણૂડાઅતિક્ષણુ યુદ્ધિનો,  
જૈન દર્શનના મૌલિક સિદ્ધાંતોના જ્ઞાનનો ખરેખરે. પરિચય આ અંથ વાંચતાં  
થાય છે. અંથમાં એવી સુંદર સ્થેયોટતા, સરલતાને ગાંભીરતા છે કે જોણે બીજે  
મહાસાગર. મૂળઅંથ સૂત્રાત્મક પદ્ધતિએ રચાયો છે. શાણ્ડોમાં જેટલી સરલતા છે  
તેટલીજ બદ્કે તેથી વધુ ગંભીરતા ભરી છે. તેના એ હુંકા નસુના આપું. વાંચતાં  
વાંચકોને જરૂર આનંદ થશે.

રાગ દેવવિજેતારં જ્ઞાતારં વિશ્વ વસ્તુનઃ શક્રપૂર્જયં ગિરામીશં તીર્થેશં સ્મૃતિમાનયે.

આ શ્લોક મંગલાચરણને છે, વાંચતાં સાચ રહેલો લાગશે. સામાન્ય વાંચકોને  
માત્ર તીર્થિંકર પ્રભુની સ્તુતિનું ભાન થશે, પરંતુ આ શ્લોકમાં ગાંભીર્ય ભયું છે ને  
તેનો ખરે જ્યાલ તો ટીકાના વાંચકોને જ થાય. આમાં શુરુસ્તુતિ છે અંતરૂશત્રુને  
અને બહિર્ભાગુને યાદ કરી ષટ્ટદર્શનના મૂળ પુરુષોને સંભાળ્યો છે.

આપું જ એક બીજું સૂત્ર ટાંકું.

સ્વપરબ્યવસાયિ જ્ઞાનं પ્રમાણं ॥ ૨ ॥

પ્રથમ પરિચ્છેદ.

પક્ષહેતુવચનાત્મકં પદાર્થાનુમાનમુપચારાત् ॥ ૩ ॥

તૃતીય પરિચ્છેદ.

સૂત્રો કેવાં સરલ ને સુંદર છે સાથે તેની ગુઠતાને ગાંભીર્યતા પણ દર્શન  
શાખીઓને આનંદ આપે તેવી છે.

લેનદર્શનના અણુમૂલાં તત્વ રત્નોના મહાસાગર સમાન એ કૃતિનું યથાર્થ  
નામ સ્યાદ્બાદ રત્નાકર છે. કે જે ₹૪૦૦૦ શ્લોકથી સુથયિત-સુશોભિત છે. સ્યાદ્બાદ  
રત્નાકર એટલે શ્રીલુનેશ્વર ભગવાને અભિષ્ટ સ્યાદ્બાદ સિદ્ધાંતનું પ્રતિપાદન કરનાર  
મહાસાગર જેમાં ઈતરદર્શનોનું એવું તો સરસ યુક્તિ પુરઃ સર નિરસન કર્યું છે કે,  
જે વાંચતાં આપણું હૃદ્યકમલ કોઈ અનેરા ભાવોથી સુવિકસિત બને છે. ભલભલા  
પ્રાભરવાર્તાઓને અંદરને અંદર શુંગળાવી મારનાર મહાસાગર જૈનદર્શનના સમસ્ત  
તાર્કિક અંગોમાં સુકટમણી સમાન આ અંથની સ્તુતિ ધણ્ણા ધણ્ણા આચાર્યોએ  
મુક્તત કરે કરી છે.

६४

## श्री अष्टमानंद प्रकाश.

हुं हीलगीर छुं के स्थानना अभावे ते भक्षाने स्थान नथी आपी शुक्तो  
तो। पणु हुं कालुमां थोडां स्तवने। आपी विरभीश।

प्रमेयरत्न कोटीभिः पूर्णे रत्नाकरो महान्

( रत्नप्रकाशार्थः )

स्याद्वादरत्नाकर तर्कवेधा सुदे सकेषां नहि देवसूरि:

( मुनि सुंदरसूरि )

स्याद्वाद रत्नाकर इत्यस्ति तर्को महत्तमो वादि वृन्दारक श्रीमद्देवसूरि विनिर्मितः  
( भक्षधारी राजशेखरसूरि )

भावार्थ—श्रीदेवसूरिए अनावेदो। महान् तर्कवाणो। स्याद्वादरत्नाकर अंथ छे।

स्याद्वादरूपकं रत्नाकरं स्वादुवचोऽमृतम् प्रमेयशत रत्नाव्यगममुक्तसं किलश्रिया २८०  
पीतान्दृष्टवा पुरा कुमोद्गवेनांभोनिधीनिह परवादि घटोद्भूत शतागम्यं व्यधा नवम् २८१

सारा वचनो युक्त अभृतथी भरपुर ने ठोड़ो युक्ति रत्नेथी परिपूर्ण ने  
सारी शोभावाणो। आ स्याद्वाद रत्नाकर छे। के जे सेंठो वाही इपी अगस्त्य ऋषी-  
आथी न पीवाय एवो। अपूर्व अंथ श्री वाहीदेवसूरीए अनाव्यो। छे।

( हरेक समुद्र करतां स्याद्वाद रत्नाकर समुद्रमां धणो। तझावत छे, कारणु के  
समुद्रमां पाणी आँढ़े होय छे, त्यारे आ स्याद्वाद रत्नाकर सुंदर वाणी अभृतथी  
भरपुर छे। भीज समुद्रने लक्षभीजे त्यागी दीधा छे, त्यारे आ स्याद्वाद रत्नाकर  
सारी शोभा-लक्षभीथी युक्त छे। भीज समुद्रने अगस्त्य ऋषि पी जय छे त्यारे  
आ स्याद्वाद रत्नाकर वाही इपी अगस्त्य ऋषिथी न पीवाय एवो। अपूर्व छे। )

आवी रीते अनेक अन्थोमां स्याद्वाद रत्नाकरी महाताना उड्ले ऐ। लर्यो  
छे। आ अन्थनुं भूण नाम 'प्रभाणुनय तत्त्वादेकालं कार' छे ने स्याद्वाद  
रत्नाकर तेनी षड्हवृत्ति छे। आ भूण अन्थ उपर तेमना विद्वान शिष्यरत्न श्री  
रत्नप्रकाशार्थ एक लघु टीका-ऐट्ले लगलग ५००० खेळनी रेक्ती छे। तेनु नाम  
रत्नाकरावताारका छे। आ टीका स्याद्वाद रत्नाकर-महासागरमां प्रवेश करनारने  
नाविडा समान सुंदर छे। रत्नप्रकाशार्थ पणु सारा दर्शनशाखी ने सारा वैयाकरणी  
ने साहित्यग्रेमी छे। तेमणे टीका एवी सुंदर सुैलीष बनावी छे के तेना वांचक  
भधुकरो। नवनवा रसो स्थवे स्थवे भेगवी तेमना जानाभृतथी त्रृत बने छे।  
प्रभाणुनयतत्त्वादेकालं कार सिवाय भीज अन्थो पणु आ महात्माना छे। प्रलात  
समरणु कुलक, मुनियंद्रसूरि स्तुति, 'श्रावक धर्म कुलक,' धत्याहि अन्थो छे; परंतु  
मेरे हुलु तेना दर्शन पणु नथी कर्यां; स्याद्वाद रत्नाकरमां प्रवेश करवा माटे  
नौकामां ऐसी ए सागरने कांठे रही तेना उडता रसाभृतना शिक्दे।—अभृत  
जिंहुओनुं पान कर्तुं छुं।

## वारी श्री हेवसूरिलु.

६५

ऐ महान रत्नाकरना दर्शनतुं परम सौभाग्य पाभी अंदर दुष्टकी भारी अभृत रस भीवानो प्रथतन कड़ं छुं अत्यारे तो ऐ पछु ऐक सौभाग्यनो विषय छे. आवी रीते अठंग शासनसेवक जैन दर्शनने जौरववन्तु उनावी तेनां भूगीयां वधुने वधु ६६-मज्जुत करी जैन दर्शननी विजयपताका। विजयवन्ति उनावी आरे दिशामां पोताना वाहनी प्रभूत शक्तिथी पोतानी कीर्ति नटडीने पहें याडी; जाणे भूलेकभां ते कीर्ति वधे इरीवणी डाय तेम स्वर्गलेकभां थृहस्पतिने लृती, पोतानी शक्तिनो परिचय आपवा गाई डाय तेम तेमना स्वूल हेहने त्यागी तेमनी साथे तेमनी कीर्ति स्वर्गलेकभां पहेंची गाई. तेना विजयनाहना लालुकार हलु पछु कर्णपुटने भरी हे छे. आ महात्माए ८३ वर्षनुं हीरायुष्य लोग०युं छे. ११४३ मां जन्मने १२२६ श्रावण वहउ दिवसे स्वर्गगमन कर्यु. ७४ वर्ष हीक्षापर्याय पाइयो छे. ११५२ मां तेमनी हीक्षा थए हुती. पर ११७४ सूरिपद लोग०युं. ११७४ मां तेमनी आचार्यपदवी थए हुती. प्रभावक चरित्रमां निये प्रभाषे उल्लेख छे.

शिखिवेद शिवे ११४३ जन्म दीक्षायुग्म शरेश्वरे, ११५२

वेदाश्रशंकरे वर्षे ११७४ सूरित्वमभवत्प्रभो:

२८६

नवमे वत्सरे दीक्षा एकाविंशत्तमे तथा

सूरित्वं सकलायुश्च त्र्यशीतिवत्सरा अभृत.

२८७

**आचार्य—** ११४३ मां जन्म, ११५२ हीक्षा, ११७४ मां आचार्यपद, नवमे वधे हीक्षा, २२ मे वर्ष सूरिपद, कुल आयुष्य ८३ वर्ष. १२२६ मां स्वर्ग.

१ प्रभाषुनय तत्त्वलेकालकार ने रत्नाकरवतारिकानुं हिन्दी भाषांतर पडितवर्य अंसीधर शर्माए कर्युं छे. परंतु भारे समेह डेहुं पडे छे के तेमां तेओ। तहन निष्ठू निवज्ञा छे. जैन दर्शननी अज्ञात जैनेतर पडितो केवां भाषांतरे। करे तेनो आ सुंदर नभुनो। छे. डेलेक स्थले एवी तो अक्षम्य भुलो। छे के जे वांचतां एमज थाय के कंतो तेमणे 'डेखु ज्ञेनारे छे' तेम समझ वेह उतारा। छे अथवा नेनी योग्य महिया समन्वया नथी। हुं तेना योग्य दाखला आपुं छुं।

अनुभेय थ तत्तुद्ये सद्भावो नास्तिताउसती आ दीक्षार धर्म कीर्तिनुं संगृहित वयन छे, तेहुं भाषांतर जुओ। अनुभेय थतुद्ये सद्भावो नास्तिताउसती छे, यह धर्म कीर्ति का वयन जड़र वाचित ही क्षया। द्वितीय परिच्छेद पृ. ६७. एकाद ऐ स्थले आ भूमि सत्र छे के टीका छे तेनो। पछु घ्याल नथी रखो। अरे एटलुंज नहि पछु लेकां छे के गद्य दीक्षा छे तेनी पछु दरकार ते पडितरत्ने नथी राणी। एकाद ऐ स्थले एवो विसंवाद छे के जे वांचतां जड़र ऐद थाय। भाषाना संस्कृत शब्दो परिभाषाए। तो एमने एम मुझी छे। डेलाक लेकानुं भाषांतर नथी कर्युं ते भाजमां।

लेखक.

૬૬

## શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

## ઉપસંહાર.

આ મહાનસ્તુરિ પુંગન-સૂર્ય ઈતરદર્શન નરપી ધુબડેને પરાસ્ત કરી, શ્વેતાભિર દર્શનને મજબુત કરી, હિગ્ઝરેના લયને તોડી નાખી રાજસલામાં જ્ય પતાકા મેળવી—સિદ્ધરાજ જ્યસિંહને હૃથે જ્યપત્ર મેળવી, આઈતુધમાંની ઉદ્ઘેષણા અનુભૂતિ, સ્થાદ્વાદ રત્નાકર (કે જેનો જેટો બીજો નથી.) જેવો જૈનદર્શનના તરવોનો મહાસાગરદ્વારા બનાવી; અનેક પ્રતિષ્ઠાઓ કરી આજીવન નિરાણાધ્ય પણે શાસનસેવા બનાવી, સ્વર્ગે સિધાર્યા. ભલે તેઓએશીને સ્થૂલ હેહ અહીં વિદ્યમાન ન હો, પરંતુ તેમનો યથાચક્ર તો ચિરકાલ પર્યાત જૈનદર્શન નલોાગણુને હેદિષ્યમાન જ રાખશે. તેમની યથાચક્ર હળ છુબર્ણુંથરે ડોતરાયેલી પડી છે-ને રહેશે. બસ અન્તમાં આ મહાનું આચાર્ય ભૂતલમાં ચિરકાલ પર્યાત જ્ય પામો ને મારા જેવા પામરો, ભક્તોનો ઉદ્ઘાર કરો એજ અલ્યર્થના.

અં શાન્તિ: શાન્તિ: શાન્તિ:

વદ્વાણુકેમ્પ.

લે. સુનિ ન્યાયવિજ્ય.

## અધ્યાત્મ.

“ Trust thyself; every heart vibrates to that iron string”—

Emerson.

અંતઃકરણમાં જ્યારે ડોઈપણ વસ્તુ, વિચાર કે વ્યક્તિ પ્રત્યે પ્રેમનો આવિષ્કાર અથવા તો આદર વૃત્તિ ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે શ્રદ્ધા ઉદ્ય પામે છે. વિશ્વના સામાન્ય વ્યવહારમાં આપણે અનેક વ્યક્તિઓ અને વસ્તુઓના સંસર્ગમાં આવીએ છીએ પણ તે સર્વે આપણા હૃદયને સ્પર્શી શકતાં નથી, પણ જ્યારે આપણુને ડોઈપણ વસ્તુ, વિચાર કે વ્યક્તિના બાધ્ય અથવા અંતર સ્વરૂપમાં સૌનંદર્યના દર્શન થાય છે ત્યારે આપણું અંતઃકરણ તે તરફ આકર્ષિય છે. પ્રાકૃત માનવી સૌનંદર્યના કલેવરનો કામી છે; જાની સૌનંદર્યના આત્માનો પ્રેમી છે. વિચાર કે વિવેક વિના, બાધ્ય સૌનંદર્યથી સુંધ થઈ માનવી જ્યારે ડોઈપણ વસ્તુ કે વ્યક્તિ પ્રત્યે આકર્ષિય છે ત્યારે અંધશ્રદ્ધા ઉદ્ય પામે છે. અંધશ્રદ્ધામાં અજ્ઞાનની છાયા હોય છે, તેમાં પાત્રાપાત્રનો વિવેક હોતો નથી. બાધ્ય સૌનંદર્યથી સુંધ ન થતાં માનવી જ્યારે વસ્તુના ગર્ભમાં રહેલા સૌનંદર્યના આત્માને પૂજે છે ત્યારે સાત્ત્વિક શ્રદ્ધા ઉદ્ય પામે છે. સાત્ત્વિક શ્રદ્ધામાં જ્ઞાનનો શુલ્ક પ્રકાશ હોય છે; અંધશ્રદ્ધામાં અજ્ઞાનની શ્યામ છાયા હોય છે. એક જ્ઞાનમૂલક હોય છે; બીજી અજ્ઞાનમૂલક હોય છે.

શાસ્ત્ર.

૬૭

શ્રદ્ધાથી જ્ઞાનનો આરંભ થાય છે. બાળવસ્થામાં જ્ઞાને બુદ્ધિ વિકસેલી હોતી નથી ત્યારે બાળક સર્વ વસ્તુ શ્રદ્ધાથી ગૃહણું કરે છે. વય વધતાં તેની બુદ્ધિ જેમ વિકસેછે તેમ તેને વસ્તુના તત્ત્વનું જ્ઞાન થાય છે. આપણા અદ્ય જીવનમાં જ્ઞાનના વિવિધ પ્રદેશો એવાનું અસંભવિત છે. જ્ઞાન અનન્ત છે; જીવન અદ્ય છે. આપણી વામન બુદ્ધિમાં જ્ઞાનના વિશાળ પ્રદેશમાં વિહરવાનું સામર્થ્ય હોતું નથી. આથી સાહિત્યના વિવિધ અંગનો અભ્યાસ તે તે અંગના સમર્થ્ય જ્ઞાની પર શ્રદ્ધા રાખી કરવે અત્યંત શ્રેયસ્કર છે. જ્ઞાનીના જ્ઞાનથી આપણા જ્ઞાનની વૃદ્ધ થાય તે અત્યંત ફળદાયી છે. પણ પંડિતોના પંડિત્યના પ્રખર તાપથી કે વિદ્યાનોમાં વિજ્ઞાની વિદ્યા વિદ્યુતથી આપણી બુદ્ધિની પ્રભા કે આત્માનો પ્રકાશ ન જાંખ્યાય તે માટે સાવચેતી રાખવી જોઈએ. શાસ્ત્રની સુવર્ણ કુંચીઓથી આત્મજ્ઞાનના દ્વાર ઉધારતાં નથી. આપણામાં સુષુપ્તિ હશામાં પડેલી શક્તિને જગૃત કરવાથી હિંય જ્ઞાનના દ્વાર ખુલે છે. આત્માથી જ આત્માનો ઉદ્ઘાર થાય છે.

આપણી બુદ્ધિમાં તર્કનું તત્ત્વ પ્રાધાન્ય લોગવે છે. બુદ્ધિનો ધર્મ શાંકા અને તર્ક કરવાનો છે. શાંકાથી જ્ઞાનનો આરંભ થાય છે; સમાધાનથી તેની પૂર્ણાંહૃત થાય છે. બુદ્ધિમાંથી જ્ઞાનારે તર્ક વિર્તક અસ્ત પામે છે ત્યારે નિશ્ચયાત્મક જ્ઞાન ઉદ્ઘ પામે છે. નિશ્ચયાત્મક જ્ઞાનની અનસ્ત પ્રભા મૂલ તારલાની માઝેક આપણા જીવનપદને અનંતકાળ માટે ઉજ્ઝમાળે છે. તર્ક વિર્તક જ્ઞાન સુધી બુદ્ધિમાં વિક્ષેપ ઉપયોગ કરે છે ત્યાં સુધી જ્ઞાન સ્થિરતાને પામતું નથી. સર્વ કર્મનો ક્ષય થવાથી જેનામાં જ્ઞાન સોણે કળાએ પ્રકારો છે એવા વીતરાગના વચ્ચનનું અવિરામ મનન કરવાથી તર્ક વિર્તક અસ્ત પામે છે, અને વિમળ જ્ઞાન પ્રકટે છે. અંતઃકરણમાં વીતરાગ કથિત વચ્ચનપર ગ ૬ પ્રીતિ અથવા ઉત્કટ અલિરુચિ ઉત્પજ થવી તેનું નામ શ્રદ્ધા. શ્રદ્ધા સમયુક્ત દર્શનનો આત્મા છે. વીતરાગ કથિત તત્ત્વનું સતત ચિંતન કરવાથી વીતરાગે દર્શાવેલા માર્ગ આપણું જીવન હોરવાની અંતઃકરણમાં પ્રેરણું સ્કુરે છે. તે પ્રેરણાને આપણા જીવનમાં અપનાવવાથી આપણે અસ્થયકુમાર માઝેક અક્ષય પદને પાનીશું.

પુષ્યના મહાયોગથી માનવી સરસ્વતીનો પ્રસાદ પામે છે. વિધાતા પ્રતીક માનવમાદિરમાં સરસ્વતીનાં મધૂરાસન માડાતી નથી. તેજસ્વી બુદ્ધિવાળા પ્રસાવશાળી પુરુષો તત્ત્વજ્ઞાનનું તત્ત્વસ્થરી જ્ઞાન મેળવી શકે છે; શાસ્ત્રના ઉંડા રહેસ્થો ઉકેલી શકે છે. સામાન્ય બુદ્ધિવાળા પુરુષો શાસ્ત્રના ઉંડાણુમાં પ્રવેશ કરી શકતાં નથી. આથી સહયુક્તનો ચોગ કરવે અત્યંત શ્રેયસ્કર છે. ગુરુની અનેક પ્રકારે સેવા કરવાથી માનવી સરસ્વતીનો પ્રસાદ પામે છે. ‘ગુરુ વિના જ્ઞાન નહિ’ એ વાક્યમાં ગૂઠ રહેસ્ય રહેલું છે. ગુરુના ચરણની રજનો અલિરુચ થયા વિના આપણામાં હિંય જ્ઞાનનો આવિલ્લાવ થતો નથી. શુર્જાનના પિયુષ પાણ આપણામાં અમૃતતત્ત્વ

૬૮

## શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

માટે ઉત્કટ અભિલાષા જાગૃત કરે છે. શુરૂની અનન્ય પ્રકારે સેવા કરવાથી સાધ્યી પુણ્યચુલાએ ડેવળજાન પ્રાપ્ત કર્યું હતું.

શ્રદ્ધા કરવામાં વિવેક વાપરવો જોઈએ. આપણે જે વસ્તુપર શ્રદ્ધા કરીએ છીએ તેના શુણ્યાથી આપણું જીવન રંગાય છે. પંખીએ પણ જે વૃક્ષમાં વાસ કરે છે તેની પાંદડીએથી રંગાય છે. અહીં રીતે આપણે જેના પર શ્રદ્ધા કરીએ છીએ તેના વિચાર અને વર્તનની છાયા આપણું જીવનપટ વણ્યાય છે. આથી શ્રદ્ધાને આદર્શ ઉચ્ચ અને ઉજાવળ હોવો જોઈએ. આપણે જે મુર્ખ પર શ્રદ્ધા કરીએ તે આદર્શે મહાત્મા કે મહુર્ખિં હોવો જોઈએ. આત્મજાનની અમર રેખાએ. તેના વહનપર વિલસતી હોતી જોઈએ; પ્રેમના દિવ્ય પરિમલથી તેનું હૃદય ઉપવન મધ્યમથી રહેવું જોઈએ. ચારિત્રની ઉજાવળ પ્રકાથી તેનું જીવન પ્રકાશતું હોતું જોઈએ. જાની, સમદદ્ધી અને ચારિત્રશીળ શુરૂની છાયામાં વસતું અત્યંત શ્રેયસ્કર છે. કલ્પતરણી માઝક તે આપણું જીવનના મનોરથ સિદ્ધ કરશે. આત્મજાની અને આત્મહદ્ધી શુરૂના ચરણ કમલનો આશ્રય કરવાથી આપણું જાણ દૂર થશે અને આપણને આત્મવિકાસના માર્ગનું રેખાદર્શન થશે.

હુનિઆમાં અનેક સંપ્રદાયો અને મતમતાંતરો પ્રવર્તે છે. તેમને પ્રધાન ઉદેશ સત્યનું પ્રતિપાદન કરવાનો હોતો નથી; પણ પોતાના સંપ્રદાયનો પ્રતિકા સ્થાપન કરવાનો હોય છે. પોતાના સંપ્રદાયનાં ગીતો ગાવામાં તેઓનું સત્ય જૈરવ બુઝે છે. આવાં સંપ્રદાયના શાસ્ત્રામાં નથી હોતા આત્માના અમર શુંભરવ કે સત્યના અનંત પ્રકાશ, આવાં શાસ્ત્રો બુદ્ધિવિલાસની રંગબૂંઘ છે. તેમાં સત્યને નામે અસત્યનાં પૂજન થાય છે, અને તેમાં વામમાર્ગની તો વાતાજ ન કરવી. મહિરાપાનમાં મહત્ત્વ માનનાર; ક્ષીસેવનમાં સંક્રાતા સમજનાર અને વર્તમાન જીવનમાં રંગસગમાં જીવનનું જૈરવ લેખનાર, વામમાર્ગને તો નન ગજના નમસ્કાર. આથી વિવિધ સંપ્રદાયોના બુદ્ધિવિલાસ કે બાધ્ય જૈનનથી ન અંગતા કે આકર્ષિતા, રાગ દ્રેષ્ટ અસ્ત પામવાથી, સમદદ્ધી અને સર્વ કર્મનો ક્ષય થવાથી સર્વજ્ઞ, એવા વીતરાગના વચનપર અનંત શ્રદ્ધા રાખી જીવનપંથ કાપવો અત્યંત કલ્યાણુકારી છે.

માનવબુદ્ધિ મર્યાદિત છે. ધ્યાનદ્વારા આપણને જ્ઞાન થાય છે અને તે જ્ઞાન જ્ઞાતા અને જ્ઞાયના દ્વંદ્વની અપેક્ષા રાપે છે. દ્વંદ્વ દ્વારા આપણને પરિમિત જ્ઞાન થાય છે, પ્રાર્થીન સમયમાં પ્રવર્તાતા તત્ત્વજ્ઞાનના સિદ્ધાંતો અને વિજ્ઞાનની માન્યતાએ અર્વાર્થીન જગતની દાખિએ અસત્ય. ઠર્યાં છે. આતું કારણ માનવ બુદ્ધની અપૂર્ણતા છે. જીવિષ્યમાં અર્વાર્થીન જગતની માન્યતાએ અને સિદ્ધાંતોપર કંઈક નાંબુંજ અજ્વાળું પડશે. માનવ બુદ્ધની મર્યાદા એ આપણા જ્ઞાનની મર્યાદા છે. બુદ્ધિમાં જ્ઞાનના અનંત પ્રદેશમાં વિહરવાનું સામર્થ્ય હોતું નથી. બુદ્ધની સીમા

શ્રીદ્વા.

૬૭

આજાંગી જ્યારે આપણે અતિનિદ્રય પ્રહેશમાં પ્રવેશ કરીએ છીએ ત્યારે આપણુને સત્ય જ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે. બુદ્ધિનું કાર્ય જ્યાં સમાપ્ત થાય છે, ત્યાં શ્રદ્ધાના કાર્યનો આરંભ થાય છે. બુદ્ધિ જે પ્રહેશને સ્પર્શી શકતી નથી તે પ્રહેશમાં શ્રદ્ધાના પ્રભાવથી આપણે અહૃત્ય સમયમાં પ્રવેશ કરીએ છીએ. શ્રીદ્વા અને પ્રેમની હિત્ય પાંખોથી માનવી જ્ઞાનના અનન્ત આકાશમાં વિહાર કરી શકે છે. અતિનિદ્રય પ્રહેશમાં પ્રવેશ કરી જે મહાત્માઓએ આત્માનું અણુમેલું જ્ઞાન જગતને ચરણે ધર્યું છે તે મહાત્માઓના વચ્ચનપર અનન્ય શ્રીદ્વા રાખી તે પ્રમાણે વર્ત્તન કરવાથી આપણે આત્મજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી શકીશું. જ્ઞાની પુલ્લોના વચ્ચનપર પૂર્ણ શ્રીદ્વા રાખી તેમણે દર્શાવેલા માર્ગ ધૈર્ય, ઉત્સાહ અને આનંદથી વિચરવાથી આપણે સિદ્ધિ મેળવી શકીશું. શ્રીદ્વા વિના સત્ય જ્ઞાન અસંબિત છે. અજ્ઞેય વસ્તુપર અંતઃકરણુમાં સત્ય બુદ્ધિ ઉત્પત્ત થવી તેનું નામ શ્રીદ્વા. Faith is the intuitive cognition of things unseen.

બુદ્ધ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાનું સાધન છે, શ્રીદ્વા જ્ઞાન સિદ્ધ કરવાનું સાધન છે. બુદ્ધિથી વિચાર સ્કુરે છે; શ્રીદ્વાથી કાર્ય સિદ્ધ થાય છે. બુદ્ધિના પ્રભાવથી આપણે નીતિના સનાતન નિયમોનો બોધ મેળવી શકીએ છીએ; શાસ્ત્રનું સૂક્ષ્મ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી શકીએ છીએ અને તત્ત્વજ્ઞાનના ઉડા રહુસ્યો ઉકેલી શકીએ છીએ. પણ જ્યાં સુધી અંતઃકરણુમાં એ સર્વો પ્રત્યે તીવ્ર શ્રીદ્વા ઉત્પત્ત થતી નથી ત્યાંસુધી એ જ્ઞાન વંધ્ય રહે છે. ડેસુડાના કુલની માઝક તે લોકોની દૃષ્ટિ આંદે છે, પણ તેથી વ્યક્તિ કે સમાજનું જીવન સુવાસિત અનતું નથી. શ્રીદ્વા ઉત્પત્ત થતાં હુદાયનો વેગ શ્રીદ્વાના વિષય પ્રત્યે લાગે છે. શ્રીદ્વાનો ઉદ્ય થતાં અંતઃકરણુમાં શ્રીદ્વાના વિષય આકાર રૂપે વૃત્તિ ઉત્ત્ત્ર થાય છે, અને વૃત્તિનો પ્રવાહ તીવ્ર અને પ્રયગ થતાં માનવીને શ્રીદ્વાના વિષયનું જ ડેવળ ધ્યાન રહે છે. તેના અંતઃકરણુમાં ડેઈ પણ અન્ય પ્રકારની વૃત્તિ વિશેપ ઉપયોગતી નથી. વૃત્તિના સંવેગના પ્રમાણુમાં મનુષ્ય સાક્ષાત્કાર અનુભવે છે. શ્રીદ્વા જ્ઞાનમાં ચૈતન્ય રેડી મનુષ્યને તેના જીવનનો આદર્શ સિદ્ધ કરવા ગેરે છે. શ્રીદ્વાના પ્રભાવથી મનુષ્યમાં અનંત વીર્ય રસૂરે છે; તેના સંકષ્પમાં અંપૂર્વ સંવેગ જરૂરે છે, તેની પ્રવૃત્તિમાં અવણ્ય ઉલ્લાસ અને આનંદ પ્રગટે છે, શ્રીદ્વા સંકલ્પનો પ્રાણ છે; જ્ઞાનનો આત્મા છે અને સિદ્ધિની શક્તિ છે.

ડેવળ શાસ્ત્રપરની શ્રીદ્વા ફૂળતી નથી. શાસ્ત્રના વચ્ચન અનુસાર વર્ત્તન કરવાનું આપણુમાં સામર્થ્ય હોય તો જ તે વચ્ચન ઇણે છે. ડેવળ શાસ્ત્રપરની શ્રીદ્વા વંધ્ય છે કર્મના અનેક પ્રકારો જાણ્યા છ્ઠતાં અને તત્ત્વાર્થ સૂક્ષ્મનું સૂક્ષ્મજ્ઞાન મેળવ્યાં છ્ઠતાં જે રાજહંસની માઝક આત્મા અનાત્માનો વિવેક ન થાય તો તે જ્ઞાનરાશિ આપણુને તારવાને ઘણાં હુઅવશે. ચંદ્રનવાહી ગર્ભભાની માઝક તે જ્ઞાનજીવનને સુવાસિત નથી કરતું. બુદ્ધિના વેલવથી આત્મવૈલવ નથી મળતો, શાસ્ત્રની શ્રીદ્વા કરતાં આપણું પોતાના સામર્થ્યપર અનન્ત શ્રીદ્વા હોંઠી જોઈએ. આપણું માં રહેલા અનંત

૭૦

## શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

વીર્યને શ્રદ્ધામાં વિનિયોગ કરવાથી આપણે રિદ્ધિ મેળવી શકીશું. આપણે વ્યક્તિ અને વિશ્વના વિજેતા બનીશું. આપણી અંદર રહેલી અનંત શક્તિને જાગૃત કરવાથી આપણે હું ગરેભાંથી આપણો વિજ્ઞયપંથ કાપી શકીશું. વિશ્વમાં એવી કોઈ વસ્તુ નથી કે જે આપણી શક્તિથી સાધ્ય ન થઈ શકે. શક્તિનો સર્વત્ર વિજ્ઞય છે, એ શક્તિના પ્રલાવથી સુદેખા પુણ્યની પાંદડીએ પાંદડીએ કુમળી પ્રલા કુટે છે; ઘોંબનને આંગળે પગ માંડતી કુમારિકાના અંગમદૈઠી મહનરાજના વિજ્ઞય મંડાય છે; રસરાજ રસરાણીના અંતરમાં રસચંદ્રિકાની મીઠી મોહીની વરસાવે છે અને ઘોગીરાજ પ્રભુના અધરની મુરલી બની વિશ્વકુંજમાં વિરાટ સંગીતતું માધુર્ય દેલાવે છે.

શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થયા પછી આપણે જે સત્યનો શ્રદ્ધાપૂર્વક સ્વીકાર કર્યો હોય તે સત્યને જીવનમાં મૂર્તિમંત કરવાનો દઠ સ ડિપ કરવો જોઈએ. અડગ સંકદ્યથીજ કાર્ય સિદ્ધિ થાય છે. આપણા સંકદ્યમાં વિક્ષેપ અને વિકદ્ય ઉપજલવનારી વસ્તુઓનો ત્યાગ કરવાથી આપણે સિદ્ધિ મેળવી શકીશું. આત્મનિરીક્ષણ કરવાથી આપણા સંકદ્યમાં અસ્થિરતાં અને વિકલતા ઉપજલવનારી વસ્તુઓનું આપણું જ્ઞાન થશે. સ્વાથ ની લાગણીએ, સુખની કામનાએ અને લોગની વૃત્તિએ આપણા સંકદ્યને નિર્ણય કરી અને આપણું નિઃસત્ત્વ કરી આપણા જીવનપર નિરંકુશ સાધાન્ય લોગવે છે. આસક્તિ અને કામનાઓપર આપણું પ્રભુત્વ સ્થાપન કરવાથીજ આપણું આપણા જીવનમાં સત્યતું સાધાન્ય સ્થાપન કરી શકીશું. મનોનિશ્ચહ અને ધનિદ્રયોના સંયમથી આપણે આસક્તિ અને કામનાઓપર આપણું સ્વામિત્વ સ્થાપન કરી શકીશું. જેમ જેમ આપણે આત્મસંયમ કેળવીશું તેમ તેમ અપણામાં આત્મશક્તિનો આવિર્ભાવ થશે. આત્મશક્તિના પ્રલાવથી આપણામાં હિંય જ્ઞાનના કિરણો કૂટશે.

આત્મશ્રદ્ધાના પ્રલાવથી મનુષ્યમાં આત્મશક્તિનો આવિર્ભાવ થાય છે. આત્મશક્તિનો આવિર્ભાવ થતાં વિશ્વમાં કાર્ય કરી રહેલી અનંત શક્તિ મનુષ્યને સહાય કરે છે. એશક્તિના પ્રલાવથી મનુષ્યને પ્રત્યેક કાર્યમાં સિદ્ધ વરે છે. એ શક્તિના પગલે પગલે વિજ્ઞયના સ્વસ્તિક પૂરાય છે. આત્મજ્ઞાનથી મનુષ્યને તેની અંદર રહેલી અનંત શક્તિની પ્રતીતિ થાય છે; આત્મસંયમથી મન અને ધનિદ્રયોપર પ્રભુત્વ મેળવી માનવી એ શક્તિનો જીવનમાં આવિર્ભાવ કરી શકે છે; આત્મશ્રદ્ધાથી એ શક્તિનો વિનિયોગ તેના આદર્શમાં કરવાથી તે સિદ્ધ પ્રાપ્ત કરે છે. જે માનવીના જીવનમાં આત્મજ્ઞાન, આત્મસંયમ અને આત્મશ્રદ્ધાની ત્રિવેણીનો સંગમ થાય છે તેનું જીવન પુણ્યતીર્થિત્વ બને છે.

શ્રીમાળીપોળ  
ભર્ય તા. ૧૦ સપ્ટેમ્બર ૧૯૨૫ }      ઉત્તમનંદ લદ્વલુસાઇ ઝવેશી

—→॥૩॥←—

સહાચાર અથવા સત્કિયા.

૭૧

## સહાચાર અથવા સત્કિયા.

( ગતાંડ પૃષ્ઠ ૪૮ થી શર. )

વિહુલદાસ મૂ. શાહ.

કહાય એમ કહેવામાં આવે કે દરિદ્રતાને સહાચારની સાથે કંઈક સંબંધ છે તો તે કથન ડેટલેક અંગે હીક હાઈ શકે. મહાપુરુષો તો હંમેશાં દરિદ્ર હોય છે અને જે સંઘોગવશતુ ડેખુનો જન્મ કોઈ સંપત્તિમાન કુલમાં થઈ જય તો તેઓ પોતાની સંપત્તિનો ત્યાગ પણ કરી હો છે. આ સંબંધમાં લગવાન મહાવીર, મહાત્મા બુદ્ધ, રાજા લરથચી, રાણી મીરાંભાઈ, કંઈક ટોલ્સ્ટોય વિગેરેના ઉદાહરણો જીવલંત અને સુપ્રસિદ્ધ છે. પરંતુ જે લોકો દરિદ્ર હોય છે અથવા દરિદ્ર ધરમાં જન્મ લે છે તેના મોટો ભાગ પ્રાચી કરીને જરૂર, સત્યનિષ્ઠ અને સહાચારીજ હોય છે. એટલું નહિ પણ તેઓની સરળતાતથા સત્યનિષ્ઠાજ તેઓને આજીવન દરિદ્ર રાખવામાં કારણભૂત જેને છે. તેઓ પોતાની સરળતા તથા સત્યનિષ્ઠાને લઈને કંઈ પણ જુદું ખોલતા નથી, ડેઝિનું ધન અપ્રમાણિકતાથી લેતા નથી, અને કોઈ પણ જીતનું છળકપટ કરતા નથી તેઓ નોકરી કરતા હોય કે વેપાર કરતા હોય, તેઓની આર્થિક સ્થિતિ હંમેશાં એક સરળીજ રહે છે એવાજ લોકોને માટે કહેવામાં આંધું છે કે “હુમારે પ્રલુ, નિર્ધન કો ધન રામ” જે લોકોનો એવો સિદ્ધાંત હોય છે તેઓ કંઈ અનીતિ અથવા અધર્મના ભાર્ગવિર જરૂર શકતા નથી. તેઓનું “હૃદ્ય હંમેશાં સંતુષ્ટ અને બલિષ્ટ રહે છે. અને તેઓનો સહાચાર એક સામાન્ય કરતાં પણ વિશેષ હોય છે. મુચ્છકટિક નાટકમાં ગરીબ આણણુ ચાઇન્ટ પોતાની કર્તાંબ્ય-બુદ્ધને લઈને ડેવી ઉદ્ધારતા, સત્યતા, સહૃદયતા ખતાચે છે ? તેને પોતાના ધન અથવા વૈભવના નાશની ચિંતા નથી થતી, પરંતુ માત્ર એટલીજ ચિંતા રહ્યા કરે છે કે “કીણાર્થમિત્યતિથયઃ પરિવર્જયંતિ” હુ દરિદ્ર છું; અને એટલા માટે મારે ધરે અતિથીએ પણ નથી આવતા. ખ્રીસ્તી ધર્મમાં સુધારો કરનાર પ્રસિદ્ધ માર્ટ્ઝન દ્યુથર એટલો બધો દરિદ્ર હતો કે તેને કોઈ કોઈ વખત પોતાના નિર્વાહને અર્થે મહેનત મળું હતી પણ કરવી પડતી હતી. છતાં તેનું શ્રેષ્ઠ ચારિત્રજ તેનું સર્વોપરિ ધન હતું.

નિષ્ઠા અને હૃદાતા પૂર્વક જે કાર્ય કરવામાં આવે છે તેમાં બહુધા સહેલતાજ મળે છે, પરંતુ તેની સાથે પોતાની શક્તિનું અનુમાન તથા સત્ય અને ન્યાયનું અનુસરણ પણ કરવું જોઈએ. એમ કરવાથી મનુષ્ય સર્વ સાંસારિક કાર્યો સહેલાઈથી કરી શકે છે અને તેના ઉત્સાહમાં અતુલ વૃદ્ધિ થાય છે. સત્યને માત્ર આપણા ધર્મ, કર્મ અને કર્તાંબ્ય વિગેરેનોજ નહિ, પરંતુ સમસ્ત વિશ્વનો આધાર માન-

વાગમાં આવે છે. પ્રાચી કરીને લોકો પણ એમ કહે છે કે સત્ય ઉપરાજ હુનિયા ટકી રહી છે, તો એ વાત સાચીજ છે. ધનવાન અથવા વિક્રાન હાવું તે કોઈ પણ મતુષ્યનું પ્રથમ અને પરમ કર્તાવ્ય નથી, પરંતુ સત્યનિષ્ઠ અને ન્યાયશીલ રહેવું એ તો દરેક મતુષ્યનું અનિવાર્ય પરમ કર્તાવ્ય છે. પ્રત્યેક કાર્યની શરૂઆત કરતી વળતે આપણે તે સંબંધી સત્યતા અને ન્યાયના સ્વરૂપને વિગ્રહ કરી લેવો જે-ધ્યાયે, તે અનુસાર કોઈ નિયમો બનાવી લેવા જોઈએ અને હમેશાં તે નિયમોનું અનુસરણ કરવું જોઈએ. કર્તાવ્ય અને સત્ય એક સૂત્રથી બંધાયલા છે. જે મતુષ્ય કર્તાવ્યપરાયણ હોય છે તે પોતાની સુધળી વાતોમાં તથા સંઘળાં કાર્યમાં સત્યતાનું પણ તેટલુંજ માન અને પાલન કરે છે. મહારાજાન હરિશ્ચંદ્ર સત્યપરાયણ હતા, તે ખાતર તેમણે પોતાનું રાજ્ય તકલ્યું, પરિવાર છોડ્યો, ચંડાલનું હાસ્તાવ સ્વીકાર્યું અમે અનેક કષ્ટ વેદ્યાં, ઈતાં પણ સત્યના પાલન ખાતર તેમને જે કર્તાવ્ય કર્મ કરવું પડ્યું તેનાથી તેમણે કદિ પણ ભેંણાં સંતાહયું અથવા બગાડયું નથી. જો કર્તાવ્યને શરીર માની લઈએ તો સત્યપરાયણતાને તે શરીરના અસ્થિ, મજજા સાધુતાને તેનું લોહી, અને સરલતાને તેનું સૌદર્ય માનવું પડશેજ. કુદુંબ, સમાજ, અથવા દેશનું કોઈ પણ કાર્ય સત્ય વગર થઈ શકતું નથી. વાસ્તવિક પ્રતિષ્ઠા એજ મતુષ્યનું મહાન ઐશ્વર્ય છે. તેના જેવી બીજી એક પણ સંપત્તિ નથી. જો એ એમ તો ન કહી શકાય કે તેની સહાયતાથી સંસારનાં સર્વ પદાર્થો પ્રાપ્ત કરી શકાય છે, પરંતુ એટલું તો નિઃસંદેહ છે કે તેની સહાયતાથી જે કાંઈ મળી શકે છે તેનું તથા તેની પ્રતિષ્ઠાનું મૂલ્ય અને મહત્વ ધણ્યાંજ વધારે છે અને તે વાસ્તવિક પ્રતિષ્ઠા પણ માત્ર સત્યતાની સહાયતાથીજ પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. સહાયતાથી મતુષ્યને સૌથી માટે લાલ એ થાય છે કે સમાજમાં તેની પ્રતિષ્ઠા ધાર્યાજ વધે છે અને લોકોના હૃદયમાં તેની માટે અતિશાય માન ઉપરાજ થાય છે. જો અપ્રમાણિકપણે પ્રાપ્ત કરેલ દ્રવ્યને લઈને અથવા ખુશામતથી પ્રાપ્ત કરેલ પદવીને લઈને કોઈ મતુષ્યની પ્રતિષ્ઠા બહુજ વધી ગઈ હોય છે તો તે પ્રતિષ્ઠા કશા કામની નથી; આપણે તેને કહિપણ વાસ્તવિક પ્રતિષ્ઠા કહી શકતા નથી. વાસ્તવિક પ્રતિષ્ઠા તો એજ છે કે જેનું કરણું અનીલિયુંત ન હોય; અને જે સત્ય તથા ન્યાયના આધાર ઉપરાજ રિસ્થિત થયેલ હોય.

એક બીજી વાત ધ્યાનમાં રાખવા જેવી એ છે કે સદ્ગ્યારી બનવા માટે કેવળ સત્યનિષ્ઠા અને ન્યાયપરાયણતાજ યથેષ્ટ નથી; આપણામાં સત્ય અને ન્યાય પ્રત્યે નિષ્ઠાજ હોવી જોઈએ એટલુંજ નહિ પણ તદ્દનુસાર કાર્ય કરવાનું સાહસ તથા બળ પણ હોવાં જોઈએ. આપણે એવું આચરણ કરવું જોઈએ કે જેની અંદર સહલાવ હોય. આપણાં હૃદયમાં હુમેશાં કોઈ જરૂરી કાર્ય કરવાની ઈચ્છા હોવી જોઈએ અને તે સત્કાર્યને આપણું લક્ષ્ય અને ઉદ્દેશ બનાવીને આપણે

## સહાચાર અથવા સત્કારા.

૭૩

કર્તાંય-ક્ષેત્રમાં ઉતરી પડવું જોઈએ. ઘણા લોકો પરમ સત્યનિષ્ઠ હોય છે, પરંતુ તેઓએ. ઉદ્દેશ્ય અને કર્તાંયના અભાવને લઈને સંસારમાં એક પણ એવું કાર્ય નથી કરી શકતા કે જેને આપણે આદર્શિક્ય કહી શકીએ અને જેનાથી લોકોને અનુકરણું કરવાતું ઉતેજન મળે. સત્યનિષ્ઠ થવાથી આપણે માત્ર એટલું જ કરી શકીએ છાએ કે કોઈ ધરાબ કાર્ય ન કરીએ; પરંતુ સારું કાર્ય કરવા માટે તો કર્તાંય-પરાયણ થવાની આવશ્યકતા છે. જ્યાંસુધી મનુષ્ય હુમેશાં સત્કાર્ય કરતો નથી ત્યાંસુધી તેનો સહાચાર સ્થિર થઈ શકતો નથી. જે લોકો સંસારનું તથા માનવજીતિનું કલ્યાણ કરવા હુંચિતા હોય તેઓએ હુમેશાં સત્કારો કરત્તાં રહેવું જોઈએ.

આજકાલ લોકોમાં પ્રાયે કરીને વિદ્ધિતા અને બુદ્ધિમત્તાની કર્ણી ન્યૂનતા નથી, પરંતુ શું કેવળ એ વસ્તુઓથી મનુષ્ય સંસારમાં મહત્વ અથવા આદર પ્રાપ્ત કરી શકે છે? તેજ માણુસ બુદ્ધિમાન, વિદ્ધાન અથવા એક કહી શકાય કે જેનામાં સત્ય-નિષ્ઠાની સાચેસાથ સત્કાર્ય કરવાની પ્રયત્ન હુંચા પણ હોય છે અને યથાસાધ્ય તે પોતાની ઉક્ત હુંચાની પૂર્તિ કરવાનો પણ પ્રયત્ન કરે છે. ગોસ્વામી તુલસીદાસ, મહારાજા પ્રિવાળુ, જસ્ટીસ રામેદે, વિગેરે મહાપુરુષો શું માત્ર પોતાની વિદ્ધિતા અથવા બુદ્ધિમત્તાને લઈનેજ આરદી બધી પ્રતિષ્ઠા પ્રાપ્ત કરી શક્યા છે? કહિ નહિ. તેઓની પ્રતિષ્ઠાનું મુખ્ય કારણ તો એ હતું કે તેઓ પરહિતાર્થી સત્કાર્યો કરતા હતા. માર્ટીન દ્વયરનો રાજાએ કરતાં પણ અધિક આદર તેનાં સત્કાર્યને લઈનેજ થયો હતો. સત્ય, ન્યાય, અને પરૌપકારને ધ્યાનમાં રાખીને જે મનુષ્ય કર્તાંયક્ષેત્રમાં ઉતરી પડે છે તેજ મહાપુરુષ કહેવાય છે અને સંસારમાં સર્વત્ર પૂજન્ય છે. સધળા લોકો તેના ઉપર વિદ્ધાસ રાખે છે અને તેણું નિર્દિષ્ટ કરેલા માર્ગનું અનુકરણું કરે છે. કેમકે તે જે કાંઈ કહેસે તેજ તે કરશે અને તે જે કાંઈ કરશે તે ઉચ્ચિત અને ન્યાયરૂજ કરશે. સંસારમાં જેટલો આદર સહાચાર અને સત્કાર્યનો થાય છે તેટલો વિદ્ધા અને બુદ્ધિનો કહિપણું નથી થતો. સત્કાર્ય કરનાર અને સહાચારી મનુષ્યજ સૈથી અધિક બુદ્ધિમાન ગણ્યાય છે. દુરાચારી અને કુકમી મનુષ્યની બુદ્ધિ ગમે તેટલી તીવ્ર હશે, તો પણ તેને કોઈ બુદ્ધિમાન કહેતું નથી. આર્થિક દાખિએ કદાચ સહાચારી મનુષ્યની ઉજ્જીવિ એક વિદ્ધાનની જેટલી ન થયેલી હોય, તો પણ એટલું તો નિઃસંદેહ છે કે તેના શુણોનો વિકાસ થયા વિના રહેતો નથી. બનવાળેગ છે કે થોડો સમય લોકો તેની દરિદ્રતા અને હીનાવસ્થા આદિને લઈને તેની વાસ્તવિક થોળ્યતા ન સમજે, પરંતુ એક વખત તેના શુણોનો વિકાસ અવશ્ય થશેજ. અને તે શુષ્ણ વિકાસજ તેનું દ્રોધ્ય પણ છે અને લોકોને સહાચારી બનવવામાં સાધનભૂત પણ તેજ છે.

સહાચારી મનુષ્ય પોતાના સહાચારને બીજાની વિદ્ધા, બુદ્ધિ અને જોટી

પ્રતિષ્ઠા વિગેરે કરતાં કંઈક વધારે માને છે, અને વાસ્તવિક રીતે તેનું એવું માનવું બ્યાજણી છે. એક વખત એક વડીલે એપીકેટેસ નામના પ્રસિદ્ધ વિક્રિયાન્સ પાસે જઈને તેના સિદ્ધાંતની કેટલીક વાતો જાણુવા ઈચ્છાયું. એપિકેટેસ સમજી ગયો કે તે મને સહભાગથી નથી પૂછતો, તેથી તેણે કહ્યું “તમે મારા સિદ્ધાંતા ઉપર કેવળ ટીકા કરશો, તમે તેનું વાસ્તવિક તાત્પર્ય જાણુવા માગતા નથી, તેટલા માટે તમને મારા સિદ્ધાંતો ન જાણુવા એજ સારું છે.” તે ઉપરથી વડીલે કહ્યું “નો હું આપના સિદ્ધાંતો પ્રમાણે ચાલવા લાગું તો હું પણ આપના જેવો ગરીબ નહિ થઈ જઈ ? તો પણી મને આટલા મોઝશોખ, ધનદોલત, ગાડીઓડાડ કેવીરીતે પ્રાસ થશો ?” એપિકેટેસ જવાબમાં કહ્યું “મને તો એ સર્વ વસ્તુઓની જરૂરજ નથી. સાચું પૂછો તો મારાથી વધારે દરિદ્ર તમેજ છો, તમને બીજાની કૃપાની ચિંતા રહે છે, પરંતુ હું કોઈની પણ પરવા નથી કરતો. એટલા માટે હું તમારાથી અધિક સંપત્તિ છું, મારા વિષે કોણો શું કહેતા હશે તેની મને લેશ પણ ચિંતા નથી રહેતી. અને હું કહ્યું પણ કોઈની ખુશામત કરતો નથી. એજ મારી અરી સંપત્તિ છે. તમારી પાસે સંપત્તિ છે, પરંતુ તમારા લેખને લઈને તે હોય કે ન હોય એ સરખું છે. મારું મનૂજ મારું રાખ્ય છે. તત્ત્વવિચારણામાં મારે સમય ઘણ્યી સારી રીતે પસાર થાય છે. તમને તમારું ઐથર્ય એછું લાગે છે. મને મારું ઐથર્ય ઘણ્યું વધારે લાગે છે. તમે અસંતુષ્ટ રહો છો અને હું સંતુષ્ટ રહું છું.”

**રાજખિં શર્વહરિએ પણ કહ્યું છે:—**

વયમિહ પરિતુષ્ટા વલ્કલૈસ્ત્વ દુકૂલે: સમ ઇહ પરિતોષો નિર્વિશોષો વિશેષ: ।  
સ તુ ભવતિ દરિદ્રો યસ્ય તૃષ્ણા વિશાલા મનસિ હિ પરિતુષે કોર્થેવાનું કો દરિદ્ર: ॥

ઇંગ્વાંડના પ્રસિદ્ધ વક્તા શેરિડનીની પણ એક વાત પણ જાણુવા ચોગ્ય છે. તે બહુજ વ્યસની તથા અવ્યવસ્થિત હતો. અને તેને લઈને જ તેની ચોગ્યતા અને પ્રતિષ્ઠા ઘણ્યી વધી શકી ન હોતી. એક દિવસે તેનો એક નોકર ચોતાનો પગાર માગવા આવ્યો; તેને શેરિડને જરા ગુસ્સે થઈને કહ્યું “શું પગાર ભાગી જાય છે ?” તે ઉપરથી નોકરે જરાન આવ્યો “સાહેખ, હું જાણું છું કે પગાર ભાગી જરાનો નથી. પણ આપની અને મારી વચ્ચે જ અંતર છે તે હું ઘણ્યી સારી રીતે સમજું છું. કુલ અને વિદ્યામાં આપ મારાથી શેષ છો એ ખરું, પરંતુ બ્યવહાર ‘લેણુદેણું અને સ્વભાવ વિગેરેમાં હું આપનાથી શેષ છું.’” નોકરનું કહેવું તદ્દન સાચું જ હતું. મારીકને તો કોણે યથાસમય દૂધિયા ચુકવવાની ચિંતા જ ન હતી અને તેને પોતાની વાતનું જ ધ્યાન રહેતું નહોંતું; પરંતુ નોકરમાં એવું નહોંતું. તે સાથી અને પોતાની વાતમાં પક્ષો હતો.

અનેક નાની મારી એવી આખતો છે કે જેના સંયોગથી મનુષ્યના સદ્ગા-

## પ્રક્રીણ්.

૭૫

રતું સંગડન થાય છે. મોટા ધનવાનું અથવા પરાંકમી બનીને લોકોની વાહવાહું કુંદવી એ આપણું અધિકારની વાત નથી, પરંતુ આપણામાં સફસૂવો અને સફ્વાસનાઓની ચૂછિ રચીને તે અતુસાર ચાલવું એ આપણું હાથની જ વાત છે. એ માટે કોઈ બાબુ સાધનોની આવશ્યકતા નથી, તેથી એ આપણેજ આધીન છે. જે કે મનુષ્યની વૃત્તિએ અને વ્યવહાર વિગેરે ઉપર બહારનાં સાધનો અને પ્રસંગોનો થોડા ધણો પ્રલાવ પડે છે, તો પણ આત્મનિષ્ઠ મનુષ્યને માટે તે પ્રલાવથી બચીને ડેકાણે આવી જવું સહજ છે. જેટલાં નાનાં મોટાં કાર્યો અથવા વિચારો વિગેરે ડાય છે તે સર્વની આપણી વૃત્તિ ઉપર થોડી છાયા પડે છે અને એ છાયાનુસાર મનુષ્યનું લવિષ્ય સુધરે છે વા બગડે છે. આપણે સારા માણસોનો સાથે રહીએ અને સારાં કાર્યો કરીએ તો આપણે સદાચારી બની શકીએ છીએ. તેનાથી વિપરીત આચરણ આપણું હુરાચારો બનાવે છે. એ એમાંથી કોઈ એક માર્ગનું અવલંખન કરવું એ આપણું અધિકારમાં છે. જીતાળમાં પણ કલ્યું છે કે—

“ આત્મैવ હ્યાત્મનો બન્ધુરાત્મૈવ રિપુરાત્મનઃ । ”

( ચાલુ )

→॥૪૩॥←

## ॥ પ્રક્રીણ ॥

નૈન મુનિરાજાઓએ રેંટીયો કાંતવો લેઝાએ ? એ વિષય ઉપર પેપરોમાં ધણીજ ચર્ચા ચાલી રહી છે. જેમાં મુખ્ય પાઠ મહાશય ચરણુદાસે સારો ભજવી સાધુ મુનિરાજેની અવગણુના કરવામાં બાકી રાખી નથી. હજુ તો સ્વરાજ્યના હિમાયતી અને દેશના મુખ્ય નાયકોમાં ( સંસારીઓમાંજ ) રેંટીયો ચલાવવાથી સ્વરાજ્ય મળે કે કેમ તેમાં પણ મતસેદ છે. ત્યાં સંસારનો સર્વથા ત્યાગ કરનાર ત્યાગી મુનિ-મહારાજાઓ જેમનું કર્તાંય અને વીતરાગ હેવતું કરમાન વીસ વસા ( એકેન્દ્રીય કાયળુંબો સહિતની ) હ્યા પાળવાનું છે ત્યાં રેંટીયો મુનિશ્રીઓ કાંતી વાયુકાયની પણ વિરાધના કેમ કરી શકે ? વાતી રેંટીયો કાંતવાનું કાર્ય સાધુ કરે તો આત્મજાન છોડી અન્ય પ્રવૃત્તિમાં પડતા સંસારી જંબળ પણ વધે. તેઓશી પૈસા મેળાવી સ્વદેહ પોષણું કરવાનું કાર્ય કરે તો સાધુપદ્ધની અવનતિ પણ થાય. મુનિરાજે ત્યાગી મહાત્મા હોલાથી અત્યારના ચાલતા જમાનામાં તો ધર્મપદેશ આપી ધર્મ-નીતિના તત્ત્વો પ્રાણોમાનમાં હેલાવવા, જાનદાન આપવું, નૈનધર્મનું સાહિત્ય હેલાવવાના ઉપરેશ દ્વારા પ્રયત્ન કરવાનું અને વધારામાં સાધુધર્મને ઉચ્ચિત અનેક શાસન સેવા કરવાનું છે; જેથી રેંટીયાની જંબળમાં પડવાનું સર્વથા અયોધ્ય છે. આવી નકામી ચર્ચાઓમાં ઉત્તરતાં નૈનેતર પ્રજામાં હાંસીપાત્ર થવું ચો઱્ય નથી.

→॥૪૪॥←

I. A.

૭૬

## શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

## વર્ત્માન સમાચાર.

આનગાહ-ઊગરા લુલા શેખુપુરા પંજામાં અત્યાર સુધી કોઈ મુનિ મહારાજનું ચાતુર્મસ નહોતું થયું. આ સાલ શ્રીમહ વિજયાનંદ સુરિ મહારાજના મણિષ આર્ય શ્રી વિજયવલ્લભ સુરિજીના રિષય પંન્યઃસળ શ્રી વિદ્યાવિજયજી મહારાજ તથા મુનિ શ્રી વિચારવિજયજી મહારાજનું ચાતુર્મસ થયેલ છે. તેઓઓના ઉપદેશથી દેરાસર જનાવના માટે એક મકાન ખરીદવામાં આવ્યું છે. આ સાલ પદ્મબલુ પર્વ અહુજ આનંદથી પસાર થયા છે. ધર્મકરણી વિજેરે સારી રીતે થયેલ છે. સુપન વરેરેનો ઉપજ માત્ર આડ ધર છતાં (રૂ. ૨૪૦૦) ની થઈ છે. સંવત્સરી પર્વના રોજ કસાઈઓની હુકનો બંધ રાખવામાં આવેલ હતી. અદ્ય એક મૂર્તિ શ્રી પાર્વીનાથ મહારાજ રી પનારતની છે કે જેણી આખા હિંદુરત્નમાં નથી. પૂજા, પ્રભાવના વગેરે સમયાતુસાર ડીક થયા હતા.

## સમાલોચના અને સ્વિકાર.

નૈન કાઠ્ય પ્રવેશ—લેખક માનજી દામજ શાદ. કિંમત ચાર આના. આ યુક્તમાં ક્યા સ્તવનો કયાં બોલી શકાય તે રિવેકપુરઃસર બતાવેલ છે. પ્રયાસ ગોળ કર્યો છે. મળનાતું ડેકાણું મુંબદ્ધ કાલાદેવી નૈન હાધસ્કુલ પ્રકાશકને તાંથી.

નૈન યુગ માસિક—શ્રી યુક્તાંદ્ર નૈન વેતાંદ્ર ડેન્ડ્રન્સ એશીસ તરફથી આ નામનું માસિક હાલ પ્રકટ થયેલ છે. આપણી ડેન્ડ્રન્સ તરફથી આવા માસિકની તે દારા ડેન્ડ્રન્સના ઉપયોગીપણ્ણ માટે—તોના તરફથી નૈન સમાજને સુચના કરવા માટે અને તેની કાર્યવાહીનું હિંગર્શન કરાવવા માટે જરૂર હતી. આ અંકમાં ૧૪ લેખો આપેલા છે, જેમાં ડેટલાક ભાસ વાંચવા જેવા છે; તંત્રી આઈ મોહનલાલ દલીયંડ લેખક, અનુભવી અને ઉત્સાહી હોવાથી સમાજને ભર્વિષ્યમાં સારો લાલ મળવા સંભર છે. લનાજમ એ રૂપીયા યોગ્ય છે. અમો તેની ઉત્ત્રતિ ધ્યાણી ધ્યાણે ધ્યાણે.

શ્રી લુચરક્ષા દ્વારા પ્રચારક મંડલી હૈદ્રાભાદ ( હદ્રીઝ ) —નો નવમો વાર્ષિક રીપોર્ટ અમોને મળ્યો છે. તે વાંચતાં તેનાં કાર્યો અને વ્યતિનાં ( તે સાથે આવેલ લેખ ) એ ભાષામાં આપેલ છે. જે વાંચતા હ્યા ઉત્પન કરે તેવો છે, સાથે આપેલ ૧૪ છાયાઓ ( દશ્યો ) જેતાં કલબ થતાં જનારોની રહ્યા માટે, કરવામાં આવતાં પ્રયત્ન માટે આ સંસ્થાને ધન્યવાદ આપવો પડે છે. સાથે તેને દરેક પ્રકારની મહદું આપવા હથ્ય પ્રેરણી કરે છે. આ રીપોર્ટ અને સાથેની હકીકતની યુક્ત અને વાંચવાની જરૂર છે. પ્રકાશક રોડ લાલજી મેદિઝનો ચુલ્લ પ્રયત્ન છે.

આ યુક્તમાં ઉપદેશકારા લુચરક્ષાના માટે પ્રયત્ન કરનાર મુનિમહારાજને તથા ઉદ્ઘાટન સ્થોનાં ફોટો આપેલ છે. ઉપજ ખર્ચનો લિસાય ચોચવટનાણો છે. આ મંડલીના કાર્યવાહકો જે બોગ આપે છે તે માટે ખરેખર ધન્યવાહને પાત્ર છે.

## स्विकार-समालोचना.

७७

**श्री सुरसुंदरी चरित्र—श्रीमान् धनेश्वर मुनि विरचित.** आ आदर्श सती चरित्रना अनुवादक आचार्य श्रीभद्र अजितसागरस्त्रिं महाराज छे. आ चरित्रनी रसिकता अने सुंदरता एटली बधी छे के वाचकना हृष्टमां ते धर्मनी संस्कृति थया सिताय रहेती नथी, ऐटलुं ज नहिं परंतु अंथकार महाराजे तेमां जखुवेल रागइपी असि अने द्वेषइपी लुजंगने शांत करवामां आ कथा जला अने मंत्रनी आपेल उपमा सथायेऽथ छे. आ अंथना भूल कर्ता श्री धनेश्वर मुनिये मागधी लाखामां जे सुंदर रथना करी छे तेनो आ अनुवाद पछु विद्व रत्न आचार्य अहाराज श्री अजितसागरस्त्रिं महाराजे सुंदर-सरख रसिक अने लाववाही गुजराती लाखामां यथास्थित विद्वतापूर्णु करेल छे. आवा अनुकरणीय उत्तम चरित्रोनो गुजरातीमां अनुवाद, ऐक विद्वान् मुनि महाराजने हाथे थाय ते आवकारदायक अने पठन पाइन माटे उपयोगी अने ते रवालाविक छे.

ऐकंदर रीते आ अनुवाद जेम सुंदर अने आकर्षक छे, तेम अनुवादक महात्माये तेनी आ अंथनी शङ्कातमां ६२ पानामां लघेली विस्तारपूर्वक अने विद्वतापूर्णु प्रस्तावना पछु खास वांयवा जेवी अने अंथना अनुवादनी उत्तमता बतावनारी छे. ते प्रस्तावनामां आ अंथना कर्ता श्री धनेश्वरमुनिज्ञतुं धतिहासिक दृष्टिये आपेल वृतांत तेमज तेमना काव्यनी प्रतिलानुं यथास्थित अने असरकारक रीते अनुवादक महात्माये बतावेल हडीकत खास भननीय छे. ऐकंदरे आ अंथ मनुष्यने धर्मनी संस्कारी जनाववा साथे तेनो मुख्य उद्देश राग द्वेषनो त्याग कराववामां रहेदा छे, तेमज जखुवेल छे ते प्रमाणे ते मननपूर्वक वांयनारने त्याग करावनार अथवा तो छेन्टे रागद्वेष पातणा करानी कर्मे कर्मे संपूर्णु आत्मकद्वयाखु करावनार छे, ऐम आ अंथ वांयता जखाय छे. आत्मअर्थी डाईपछु मनुष्यने माटे आ चरित्रअंथ उपकारक अने आवस्थक होइ खास वांयवा योग्य छे. मनुष्य गण्यना उपकार माटे परिश्रम लध आ अनुवादना कर्ता आचार्य श्री अजितसागरस्त्रि�ं महाराजे घरेभर जनसमाज उपर उपकार कर्यो छे. अंथनो अनुवाद जेम सुंदर अन्यो छे तेमज तेनी भाव सुंदरता-कागण टाईप तथा सरस खाईडीग्यो अबंडूत करवामां आवेल छे. ज्ञेनोना नष्ट शीरकाओना जिज्ञासुओये सात आना टपाल खर्चना मेकलवाही नीयेना स्थलेथी लेट भणेश.

**श्री अजितसागरस्त्रिं शास्त्र संअह शा. शामगदास तुलजाराम प्रांतीज.**

### **श्री विजयधर्म प्रकाशक सभानो धीजो वार्षिक रिपोर्ट.**

यु३ अदिति निमित्ते आ सला ए वर्ष थयां स्थापन थयेल छे. वडतृत्वकणा अने लेखन-कणा प्रीतिववा अने नैन डेसनी यथाशक्ति सेवा करवानो. वगेरे तेमणे उद्देश राखेल छे. ए अभाष्ये ते ए वर्ष थया कार्य इर्से छे. आ वर्षे चार हिवस सुधी यु३भक्ति, धनामी भेगावडा, अने वर्ष गांड उज्ज्वला निमित्ते भेगावडा कर्या हता. उद्देश प्रमाणे शांतिपूर्वक हाल तेमनुं कार्य थहुं जेवामां आवे छे. भेम्यूरो नैन अने नैनेतर हेवा छतां उत्साही अने संपीडा छे. अमो तेमनी उभनि छच्छीये छीये.

— → \* ← —

૭૮

## શ્રી આત્માનંદ મહારાજા.

વિવિધ-વિચારમાલા—સમારક વ્યાંક — અમેને મળ્યો છે. ગુરુલક્ષ્મિ નિમિત્તે પ્રગટ થતી આ પત્રનો સમારક અંક જુદા જુદા વિદ્યાન લેખકાથી લખાયેલ ઉપયોગી લેખાથી ભરપુર છે ને વાંચવા જેવો છે. મુખ પૃષ્ઠ ઉપર પણ ગુરુન્યે અને તેઓશીના નિદ્રહસ્ત શિષ્યોની છ્યાં આપી તેની સુંદરતામાં વૃદ્ધ કરી છે. આ અમેને તેની આખાડિ ઘણીયે છીયે.

પહેલી ગુજરાતી પત્રકાર પરિપદ—( અમદાવાદ ૧૯૨૪ ) નો પ્રથમ રિપોર્ટ અમેને મળ્યો છે, પત્રકારને મુશ્કેલ અને વિષમ સંનોગામાં જે કાર્ય કરવાનું હોય છે, અને તેઓનાં સાધનો ડેટલાં મોણાં, અધુરાં છે અને ડેવી જવાબદારીઓમાંથી પસાર થવાનું હોયું છે વગેરે સ્થિતિમાંથી પસાર થઈ પગલર થવા માટેના હેતુ સાથે, જાત તૈયારી અને જાત સુધ્રારણા સાધવા સાથે, પરસ્પર મિત્રભાવ અને ભાઇચારો વધારવો તે ઉદ્દેશથી આ પરિપદ ભરવામાં આવેલી હતી. આપી પરિપદની આવસ્થાકર્તા હતી તે ઉત્સાહપૂર્વક ભરાઈ છે છતાં ભવિષ્યમાં તેને ટકાવી રાખવા, ઉદ્દેશ પાર પાડવા અને હિવસાનુહિવસ તેની પ્રગતિ કરવા પ્રયત્નો કરવા ખાસ જરૂર છે. આ રિપોર્ટમાં પરિપદના પ્રમુખ કે જેણે લાંબી મુદ્દત સુધી પત્રકારનો ધ્વનિ કરી સેવા બળવેલ એવા અનુભવી પ્રમુખ શેડ મેહરળુકાધ્રનું ભાગથી ખાસ મનનીય છે. સિવાય ખીજા વિદ્યાન બધુંઓ કાલેલકર સાહેબ વિગેરના લેખો પણ ઉપયોગી હોઈ આમે રિપોર્ટ વાંચવા જેવો છે. ભવિષ્યમાં કાર્યવાહી આગળ ચલાવવા માટે રા. ભીરાકાલ ની પારેખ તથા ચીમનલાલ એમ. મોદીને સેકેટરીઓ અને ખીજાપત્રેના તંત્રીઓની એક ક્રમિયી આ પરિપદ માટે નિમબામાં આવી છે. સાથે પત્રેનું પ્રદર્શન પણ જેવા અને જણુવા લાયક તથા એચ્યાણુકારક હતું. અમે આ પરિપદની નિરંતર આખાડિ ઘણીયે છીયે. આ પરિપદના બાહોશ તંત્રીઓ ઉત્સાહી હોવાથી ભવિષ્યમાં તેનું કાર્ય ઉત્તરમ રીતે ચાલશે એમ અમે માનીયે છીયે.

શ્રી નૈન શુભક મંડલ ભાવનગર સં. ૧૯૮ ની સાલનો રિપોર્ટ — નૈન ભાગ-કેની ડેણનથીના ઉત્તેજન અર્થે ભવિષ્યમાં વિશેષ પ્રયાસ કરવાની યોજના જણુવેલ છે. સાથે ઉપર ખર્ચનો દિસાય પણ આપવામાં આવેલ છે.

જ્યાંતી — સ્વો શ્રીમહ આચાર્ય મહારાજશ્રી વિજયકમળસ્કુરીધીરજી મહારાજશ્રીની સુવર્ગવાસ લિખિ આશો શુદ્ધ હોય રત્નિવારના રોજ હોવાથી શ્રી નૈન આત્માનંદ સભા ભાવનગર તરફથી તેઓશીની જ્યાંતિ ઉજવવામાં આવી હતી. સવારે શ્રી પંચતિર્થાંતી પ્રણ ભણુવવામાં આવી હતી અને અધોરે સ્વામીવાતસલ્ય કરવામાં આવ્યું હતું.

જલદી મંગાવો !      થાડી નકલો સીલાકે છે.      જલદી મંગાવો !

## શ્રી નેમનાથ પ્રભુનું ચરિત્ર.

શ્રી નેમનાથ બગવાન તથા સતી રાજેમતીનું નર ભવતું અપૂર્વ ચરિત્ર, સાથે જૈન મહા-ભારત-પ્રાંતની કૌરવનું વર્ણન, અતુલ પુણ્યવાન શ્રી વસુદેવ રાજના અદ્ભુત વૈભવતી વિસ્તાર પૂર્વે કથા, મહાપુરુષ નગરાન અને મહાસતી દમયંતીનું અદ્ભુત જીવન વર્તાત, તે સિવાય પ્રભુના પાંચ કલ્યાણકો, પરિવર્તન વર્ણન અને બીજી અનેક પુણ્યશાળા જ્ઞાના ચરિત્રથી ભરપૂર ચુંદર ટાઈપ, સુશોભિત બાઈડીંગથી આકંકૃત કરેલ આ ગ્રંથ છે. વાંચતાં આત્માદ ઉત્પન્ન થાય છે. કિંમત રૂ. ૨-૦-૦ પોસ્ટેજ બુદ્ધિ. —•—

જલદી મંગાવો !      નહીં તો તક ખોશો !      જલદી મંગાવો !

## આ સુપ્રાર્થનાથ ચરિત્ર ( ભાગાંતર ).

ભાગ ૧ લો તથા ભાગ ૨ જે.

( અનુવાદક : - આચાર્ય મહારાજ શ્રી અણુતસાગરઙ્ગ. )

પ્રભુના કલ્યાણકો અને દેવોએ તે વખતે કરેલ અપૂર્વ લક્ષ્મિનું વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન, શ્રીસુપ્રાર્થનાથ પ્રભુને ડેવણજાન ઉત્પન્ન થયા પછી અનેક સ્થળે વિચારી ભગ્યજીવાને આપેલ ઉપદેશ, અનેક કથાઓ અને આરક જ્ઞાને પાણવા લાયક નનો અને તેના અતિયારો વગેરેનું વર્ણન ધાર્થિંગ વિશાળ રીતે આપેલ છે, આ કથાના ગ્રંથામાં બુદ્ધિનો મહિમા-સન્ભાપતું વિવેચન, અદ્ભુત તત્ત્વવાદનું વર્ણન, લૌકિક આચાર, વ્યવહાર, સામાજિક પ્રવૃત્તિ, રાજકીય પરિસ્થિતિ, ધાર્મિક પ્રભાવ તથા નૈતિક જીવન વગેરે તત્ત્વનો પણ સમાવેશ કરવામાં આવેલ છે. એકંદર આ ગ્રંથ માનવજીવનનો માર્ગદર્શક, જૈન દર્શનના આચાર વિચારનું ભાન કરવનાર એક પ્રબળ સાધનિય છે.

ઉંચા રેશમી કપડાના પાક આઈન્ડીગના એક હજાર પાનાના આ એ ગ્રંથની કિંમત રૂ. ૪-૮-૦ પોસ્ટ ખર્ચ બુદ્ધિ. —•—

## અમારી સભાનું જ્ઞાનોદ્ઘાર ખાતું.

- |                                    |   |
|------------------------------------|---|
| ૧ જૈન અયૈતિહાસિક ગુજરી રાસ સંબંધ   | ૧૪ પ્રમાણક ચરિત્ર ભાગાંતર.  |
| ૨ પદ્ધતિથાનક સરીક.                 | ૧૫ શ્રી કુમારપાળ પ્રતિષ્ઠાધ અનેક ઉપ-  |
| ૩ વિજાપુર સંબંધ.                   | દેશક કથાઓ સહિત.   |
| ૪ સંસ્તારક પ્રકૃષ્ટિનું સરીક.      | ૧૬ આચારોપદેશ. ભૂગ તથા ભાગાંતર સાથે.   |
| ૫ વિજયહેવસુરિ મહાત્મ્ય.            | ૧૭ કાય્યસુવાડર ( શ્રીઅણુતકાય્ય કિરણા-<br>વળી ) નંબર ૮-૧૦-૧૧-૧૨-૧૩-૧૪<br>ગ્રંથમાં મદદની આપેક્ષા છે.  |
| ૬ જૈન ગ્રંથ પ્રશાસ્તિ સંબંધ.       | ૧૮ પંચ પ્રતિકમણુ સૂત્ર. ( શાલી )<br>સામાન્ય અર્થ, ભાવાર્થ, વિશેષાર્થ અને<br>કટલીક બીજી નવીન હાકતો સ.થે અભ્યાસી<br>એને જાણુના માટે જૈન પાડશાળામાં<br>ખાસ ચલાલવા ચો઱્ય. |
| ૭ લિંગાનુશાસનસ્વોપદા ( રીડા સંથે ) |   |
| ૮ શુરૂતત્વ વિનિશ્ચય.               |   |
| ૯ શ્રી વિમલનાથ ચરિત્ર ભાગાંતર.     |   |
| ૧૦ ધર્મસલ પ્રકરણ ભાગાંતર.          |   |
| ૧૧ શ્રી વાસુપૂર્ણ ચરિત્ર           |   |
| ૧૨ ચૈત્યનંદ મહાભાગ્ય ભાગાંતર.      |   |
| ૧૩ નવતત્ત્વ ભાગ્ય ( ભાગાંતર )      |   |

## ખરું ચેતન.

“ ખરું ચેતન અને તઙ્દીન્ય શક્તિ સંપૂર્ણ વિકાસ પામેલા મનુષ્ય શરીરમાં આવે છે. તે નૈસર્ગિક જીબ અને ઉચ્ચ ભાવનાની ઉત્પાદક અને છે. જ્યારે શક્તિહીન વાળા મનુષ્યમાં એવા નૈસર્ગિક જીબ અને ઉચ્ચ ભાવનાનું પ્રમાણું અહૃતું એહું આવે છે. શારીરિક સ્થિતિ અને ચેતનાને નજર આગળ રાખી વિચાર કરીએ તે મોટી ઉમરના મનુષ્યોનાં શરીરી અવિકસિત જ હેણાય છે. આવો શરીરવિકાસને તે માનવહેઠની અપકૃતતા જ સુચવે છે. અને એવી અપકૃતતા મનુષ્યનું વ્યક્તિ રીતે પ્રકાશિત કરવામાં આડી આવે છે. આથી સહજ સમજશે કે મનુષ્યજીવનની તાનો ખરો આધાર સંપૂર્ણ શારીરિક વિકાસ ઉપર જ અવલંબી રહે છે એ શારીરિક વિકાસ પ્રાપ્ત કરવા અને પ્રાપ્ત વિકાસને સુસ્થિર રાખવા સાચા ન પ્રયત્નનો કરવા એ પ્રાણીમાત્રાની પવિત્ર દરજ છે. હુંકામાં આપણું શરીર સર્જન, સુધારિત અને સુંદર બનાવવું એ આપણું પ્રથમ કર્તૃવ્ય છે.

“ ધ્યાન મનુષ્યો અર્ધજીવિત અને અર્ધમૃત જીંગી ગુણરે છે. શારીરિક અભાવે તેઓનાં શરીર સુક્ષ્મ અને મ્હેણ નિસ્તેજ હેણાય છે. મનુષ્યશરીરની વિકાસ ઉપર ને શક્તિનો આધાર છે તે શક્તિ એવા વિકાસના અભાવે તેઓમાં જેવારું નથી. શરીરમાં રહેલી અનેકવિધ શક્તિઓનો નિયમિત અને સતત ઉપયોગ સંપૂર્ણ વિકાસ અર્થે અતિ આવશ્યક છે. એ વાત તેવા મનુષ્યોના મનપર બરોબર જોઈએ. શરીરનો દરેક અવયવ બરાબર વિકસનો હોય છે ત્યારેજ મનુષ્ય શરીર દર્શન કરાવે છે. હુરેક સનાયુમાં થનથનાટ કરી રહેલું ચેતન મનુષ્યની કલા ઉચ્ચાકાશમાં ડડાડે છે, મનુષ્યમાં હિંમત અને સામર્થ્ય રેડે છે, જીંગીની અથ શક્તિતામાં ફેરવી નાખે છે અને અનેક મહેંઘાઓને જગાડે છે. ગમે તેવું ભારે હૈનિક કામ પણ એવા ચેતનવાળા મનુષ્યને મન ભાગ રમત જ હેણાય છે. આલસા એના શરૂ છે, એવો મનુષ્ય, પોતાના હરહેશના કામકાજમાં આનંદ અને રસ ન અને જ્યાં આનંદ અને રસ આયો ત્યાં કાર્યની સફ્ફૂલતાજ સમજવી. એવો મન માન જ રહે છે અને હમેશાં પોતાની શરીરમાત્રાની ચોક્કસ પગલાં આગળ વધ્યેજ

“ શરીર વિકાસ ” માં